दीवाना

अंक : १८ वर्ष : १७ १ नवम्बर १९८१

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा : ३५ रुपये
अर्द्ध वार्षिक : १८ रुपये
एक प्रति : १.५० रुपये

मुख्य पृष्ठ पर

राज हमारा दुनिया में है
हम सुबह कहें या रात,
बन्द करें हम चलना फिरना
जो न माने हमारी बात।
देखो हमने बन्द किया
इस ऊंट का खाना पीना,
एक गैलन से हफ्ता चलता
बस यही है इसका जीना।

आगामी अंक में

●●

मोटापे के लाभ

●●

सेनाओं का
खर्चा कम कैसे हो ?

●●

मुफ्त पोस्टर हनुमान जी

आपके पत्र

दीवाना अंक मिला, मुख पृष्ठ देख कर हंसी को रोका न जा सका. गरीबचन्द की डाक, काका के कारतूस, सवाल यह है आदि फीचर इतने मंनोरंजक लगे, कि पूछो मत ! कुत्ते का पोस्टर अच्छा लगा. कृपया मुफ्त पोस्टरों में महापुरुषों के जैसे पं. नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, शहीद भगतसिंह जैसे पोस्टर देने की कृपा करें. इनके जीवन के विषय में जानकारी भी अवश्य दें.

दूसरे आजकल दीवाना में दी जाने वाली पहेली के स्थान पर कोई दूसरी पहेली छापने की ओर ध्यान दें, अन्यथा इस वर्ग पहेली को सुलझाने के विषय में कुछ जानकारी दें. धन्यवाद सहित.

—संजय गर्ग, दिल्ली

दीवानी का अंक ११ प्राप्त हुआ मुख पृष्ठ बहुत पसन्द आया. मैं दीवाना का पुराना पाठक हूं, इसके सभी फीचर बहुत अच्छे लगते हैं. मोटू पतलू, सिलबिल-पिलपिल, सवाल यह है तथा नामी चोर बहुत रोचक थे. नया धारावाहिक उपन्यास भी बहुत रहस्यमय और रोमांचकारी, है मुफ्त पोस्टर बहुत पसन्द आते हैं कृपया किसी अंक में स्व. गायक मोहम्मद रफी का पोस्टर छापने की भी कृपा करें. **—माणिक श्रेष्ठ, नेपाल**

दीवाना का नया अंक कुछ देर से मिला, वाकई संपादक जी, आपको दाद देनी पड़ेगी. आप हर बार दीवाना में ऐसी चीज़ पेश करते हैं, कि काबिले तारीफ होती है. सच कहिए दीवाना तो दीवाना ही है. दीवाना एक हास्य पत्रिका है इसमें कभी आप फिल्मों के हास्य कलाकारों के मुफ्त पोस्टर भी छापने की कृपा करें. **—सलीम भाई, गुजरात**

सवाल यह है?

सवाल यह है ? डीयर, देखो इन डिब्बों में क्या क्या माल भरा है ?

पहले मैं यह
इस डिब्बे में
माल बच

सवाल यह है ? तुम दोनों इक्कीस साल से साथ हो और अब तलाक लेना चाहते हो। क्या तुम में इक्कीस बरस से झगड़े चल रहे हैं ?

नहीं। झगड़ा तो एक बरस से चल रहा है।

तो बीस साल तुम ने हंसी खुशी गुज़ारे ?

जी हां, बीस साल हम बिना शादी कि
रहते रहे। शादी को केवल एक साल

सवाल यह है: मैं ने इतनी बार ट्राई दी, पर किसी ने मेरा ड्राईविंग लाईसैंस नहीं बनाया. पता नहीं क्यों?

अब तो पता लग गया . . .क्यों ?

ादिमानव
ाजे के पास यह खुर्च पुर्च कैसी है? यद आज वह जल्दी ही आ गये हों, आज ़ड सैटर्डे है न? गुफा के द्वार का पत्थर काती हूं! आई
ओह यह क्या!
न इस तरह डरी क्यों बैठी हो? खुश ें! आज मैं बड़ा हिरण मार कर लाया म्हारे ब्लाउज के लिये कितनी अच्छी निकलेगी!
देखो जी, तुम कुछ प्रबन्ध करो। हर कोई हमारी गुफा में घुसने की कोशिश करता है। मुझे भीतर से पता ही नहीं लगता कि कौन आया है। आज ही जंगली बिल्ला अन्दर घुस ही गया था। बाल २ बच गयी।
म्हें कोई परेशानी नहीं होगी। जो कोई आयेगा वह यह डोरी खींचेगा। डोरी का दूसरा कोयल के गले में बंधा रहेगा। डोरी खिंचने पर कोयल का गला खिंचेगा और वह ड़ेगी, बस तुम्हें पता लग जायेगा कोई जंगली आया है। अन्दर से पूछ कर पत्थर हटाया करना।
इसे क्या कहते हैं?
कोयल बैल।

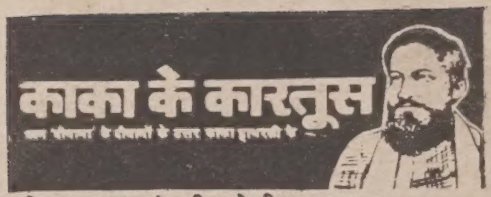

उमेश ज्ञान चंदानी, प्रेमी—नागपुर

प्र : मेरी प्रेमिका के लिए एक अच्छा सा 'शेर' बताइए ?

उ : 'शेर' देखकर सुन्दरी बकरी सी मिमियाय।

थर थर कांपे तन बदन, हार्ट फेल हो जाय।

चन्द्रशेखर गोस्वामी, भीमगोड़ा—हरिद्वार

प्र : आशा और निराशा से मनुष्य को कब मुक्ति मिलती है ?

उ : जब तक है यह जिंन्दगी, तब तक आस-निरास।

इनसे पीछा तब छुटे, निकल जाय जब श्वांस।

मुकेश भटनागर 'आशिक' चित्तौरगढ़

प्र : मैं और मेरी महबूबा, दोनों बदनाम हो रहे हैं, क्या करें ?

उ : रेल चलाओ इश्क की छोड़छाड़ सब काम ।

जितनी बदनामी मिले, उतना होगा नाम।

कमल तलरेजा, उदयपुर (राजस्थान)

प्र : शादी के लिए सात फेरे जरूरी होते हैं क्या ?

उ : क्यों फेरों के फेर में, चक्कर खाउ हजूर।

करो कोर्ट मैरेज तो, सब झंझट हों दूर।

जगन अरोड़ा रेवाड़ी (हरियाणा)

प्र : इश्क के मरीजों का कोई अच्छा सा इलाज बताइए ?

उ : वैद्य डाक्टर थक गए, पाया नहीं इलाज।

निगल नींद की गोलियां, मिटे इश्क की खाज।

रामबहादुर थापा, नौतनवां बाजार (उ.प्र.)

प्र : मैं फौजी जवान हूं, एक लड़की को चाहता हूं, लेकिन उससे प्रेम प्रकट कैसे करूं ?

उ : बाजार जाइए, कुछ गहने कुछ साड़ियां लाइए।

पेश करके, अटेंशन में खड़े होजाइए।

अशोक जौहर नीलम, देहरादून

प्र : पराजित नेता और फ्लाप अभिनेता की पहिचान ?

उ : कन्नी काटें मित्रगण, देय न कोई साथ।

बिता रहे हैं जिंन्दगी, माला लेकर हाथ।

मसर्रतखान, श्रीपुरा कोटा (राज०)

उ : मैं अपनी शादी में काकी को बुलाना चाहूं तो ?

उ : काकी को देंगे नहीं, काका ऐसा चांस।

उसे देखकर बराती, करें भारवड़ा डांस।

उपेन्द्र कुमार द्विवेदी, पाण्डेपुर—वाराणसी

प्र : मेरी लम्बाई जरूरत से ज्यादा है, कोई प्रेमिका घास नहीं, डालती, क्या करूं ?

उ : 'बच्चन' जैसा मुखौटा अगर लगालें आप।

फंस जाएगी सुन्दरी, घास चरो चुपचाप।

लेखको से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिख कर भेजें. हर प्रकाशित कथा पर १५ रु. प्रति पेज पारिश्रामक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिये पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें—**सं.**

होंगे बच्चे स्वस्थ
फले फूलेगा बचपन
इन्हें पिलाओ....
मुग़ली घुट्टी 555

पुष्ट व सदा निरोगी
रखने के लिए
पाँच वर्ष की आयु तक
दैनिक प्रयोग कराइए
बच्चों को स्वस्थ बनाइए

अनेकों
माता-पिता
द्वारा
प्रशंसित.....

श्रीराम आयुर्वेद भवन दिल्ली-110032

आपका भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र देवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : मनोरंजन आदि पर व्यय, मिलेजुले हालात चलेंगे. यात्रा छोड़ दें, कोई अप्रिय घटना हो सकती है, शत्रु से बचें, लाभ यथार्थ होगा, कारोबार सुधरेगा।

वृष : कामों में काफी व्यस्तता रहेगी, आय यथार्थ, हालात सुधरेंगे, कारोबार प्रायः पहले जैसा ही चलेगा, यात्रा सफल, आर्थिक दशा अनुकूल रहेगी।

मिथुन : लाभ अच्छा पर मिलेगा देर से, व्यय अधिक, कारोबारी कामों में रुचि बढ़ेगी, कोई अधूरा काम बनेगा, आय में वृद्धि, यात्रा में सुख, संघर्ष काफी रहेगा।

कर्क : विरोधियों से बचें, कामों में अड़चन आएगी, कारोबार सुधरेगा, लाभ भी समय पर मिलता रहेगा, आमदनी अच्छी होगी, यात्रा छोड़ दें या सावधानी से करें।

सिंह : मनोरंजन पर खर्च, हालात पहले जैसे ही चलेंगे, काम समय पर न बन सकेंगे, लाभ भी देर से मिलेगा, बाधाएं काफी आएंगी, कारोबार एवं लाभ भी बढ़ेगा।

कन्या : नातेदारों से मेल-जोल, समय भी अच्छा व्यतीत होगा, आर्थिक चिन्ता, व्यर्थ के झंझटों से परेशानी, यात्रा सफल रहेगी, मित्रों से सहयोग, कामकाज अधिक।

तुला : कारोबार बढ़ेगा, आर्थिक लाभ कुछ देर से मिलेगा, कामों में व्यस्तता बढ़ेगी, लाभ भी अच्छा होगा, सुस्ती या थकावट का प्रभाव रहेगा, सरकारी कामों में सफलता।

वृश्चिक : रुकावटें दूर होंगी, आवश्यक काम बनेंगे, यात्रा हो सकती है, कोई विशेष सूचना मिलेगी, आय में वृद्धि, घरेलू योजनाओं पर व्यय होगा, संघर्ष काफी रहेगा।

धनु : यात्रा हो तो सफल रहेगी, व्यय अधिक, संघर्षमय हालात का सामना, परिश्रम करने पर कुछ अधूरे काम बनेंगे, लाभ अच्छा होगा।

मकर : काम बनते रहेंगे, मनोरंजन आदि पर व्यय, कोई अप्रिय घटना हो सकती है, लाभ यथार्थ, व्यय अधिक, सुस्ती छाई रहेगी, विरोधी अकारण हो रहेंगे।

कुम्भ : रुकावटें काफी आएंगी, यात्रा सावधानी से करें, सुस्ती आदि का प्रभाव रहेगा, भाई के सहयोग से सफलता मिलेगी, लाभ भी अच्छा होगा, यात्रा सफल।

मीन : हालात सुधरेंगे, कोई विशेष सूचना मिलेगी, यात्रा आसपास की और सफल रहेगी, अफसरों से मेल जोल, कोई रुका काम बन जाएगा, मनोरंजन आदि का व्यय

मुलाकात एक हिप्पी से

—कन्हैयालाल कपूर

हिप्पियों के बारे में बहुत कुछ पढ़ा और
ुना था। लेकिन किसी हिप्पी से मुलाकात
हुई थी। एक दिन एक सभा में एक
्यक्ति पर नजर पड़ी उसने दाढ़ी और सिर
के बाल इतने बढ़ा रखे थे कि जेल से भाग
हुआ अपराधी लगता था। कमीज उल्टी
हन रखी थी और पाजामें पर मिट्टी और
ल के बेशुमार दाग थे। हमने उससे
छा— ''क्यों आप हिप्पी हैं?''

उसने गुर्राकर जवाब दिया—''जी नहीं! हम एक मशहूर शायर हैं।''

इसी तरह का एक और धोखा उस दिन हुआ, जब हमने एक ऐसे नवयुवक को जिसने बैण्ड मास्टरों जैसा लिबास पहन रखा था, हिप्पी कहकर पुकारा और उसने हमारी अक्ल का मातम करते हुए हमें सूचित किया कि वह किसी कालेज का प्रोफेसर है।

पिछले दिनों हमें एक स्वास्थ्यवर्द्धक

स्थान पर जाने का सुअवसर मिला। एक सुबह हम सैर करते हुए एक बादी में जा निकले। वहां एक झरने के पास एक नवयुकक को बैठे हुए पाया। उसने हमें देखकर एक ऊंचा कहकहा लगाया। वैसे तो हमारी शक्लसूरत ही ऐसी है कि जो अजनबी हमें पहली बार देखता है, उसका ख्वाहम-खाह मुस्कराने का जी चाहने लगता है, लेकिन हमने किसी को इतना जोरदार कहकहा लगाते हुए कभी न देखा था। हैरान होकर हमने उससे सवाल किया— "आप कैस पर हंस रहे हैं?"

जवाब में उसने एक और गगनभेदी कहकहा लगाया। हमने घबराकर कहा—"खुदा न करें, आप पागल तो नहीं?"

उसने तत्काल गंभीर होते हुए जबाव दिया—"पागल नहीं! मैं हिप्पी हूं!"

यह सुनकर जान में जान आयी। हम उसके करीब बैठे गये और दोबारा सवाल किया—"आपको हमें देखकर हंसी क्यों आयी थी?"

"इसलिए कि आप परम्पराओं के गुलाम लगते हैं।

"कैसे?"

"आप बेहतरीन सूट पहने हुए हैं। टाई का रंग कोट से मिलता है और अभी-अभी शेव करके आ रहे हैं।"

"इसमें हर्ज ही क्या है?" फायदा यह कि इन्सान इन्सान नजर आता है।"

इस वाक्य पर वह खिलखिला कर हंसा और बोला—"यह सब झूठ है। नुमाइश है। आप मुझे इन्सान बिल्कुल नहीं लगते।"

"और क्या लगता हूं?"

"अव्वल दर्जे के धोखेबाज!"

"जी हां! एक ऐसे धोखेबाज जो दूसरों के बजाय अपने आपको धोखा दे रहा है। जो समझता है कि जिन्दगी अर्थपूर्ण है और जिसका ख्याल है, शिक्षा नैतिकता और विज्ञान संसार को बेहतर बना सकते हैं।

"यह समझने में हर बुद्धिमान न्यायसंगत है।

"न्यायसंगत!" उसने हमारे हाथ पर हाथ मारते हुए कहा—"आप एक बहुत बड़ी गलती में फंसे हुए हैं। असल में जिन्दगी बिल्कुल अर्थहीन है। अगर आप फ्रांस के आधुनिक लेखक 'सार्त्र' और 'कामूं' का दर्शन पढ़ें तो आपके सामने सत्य स्पष्ट हो जाएगा कि जिदंगी 'एब्सर्ड' यानी निरर्थक है।"

"और शिक्षा, नैतिकका और विज्ञान?"

"ये जिदगी से भी निरर्थकतर हैं।"

"फिर तो जिन्दा रहने का कोई फायदा नहीं। क्यों न इन्सान आत्महत्या कर लेय।"

"आत्महत्या निरर्थकतम क्रिया है।"

"फिर आपके ख्याल में क्या करना चाहिए?"

"वही जो हम हिप्पी कर रहे हैं।"

"आप तो भंग, चरस, गांजा वैगरह पीकर मस्त रहते हैं।

"जिदंगी का लुत्फ उसी मस्ती में है। भंग पीकर या एल.एस.डी. की गोली खाकर हम अनुभूतियों की उस दुनिया में पहुंच जाते हैं, जहां हुस्न ही हुस्न है। रंगीनी ही रंगीनी है। जहां न प्रेमिका का दुःख है,न दुनिया का। एक ऐसी जन्नत जहां से उदासी और निराशा को जलचिंतन कर दिया गया है।"

"लेकिन नशा उतर जाने के बाद आप फिर इसी दुनिया में आ जाते हैं।"

"यह सही है, लेकिन जो दिलचस्प और सुन्दर पल हमें उस दुनिया में प्राप्त होते हैं, उन्हीं का नाम जिंदगी है। आपके एक शायर

शेष पृष्ठ ३६ पर

मोटू पतलू

पिछले दिनों घसीटा राम का वास्ता सेठ जी और मुनीम जी बने दो बदमाशों से पड़ा था. जिन्होंने घसीटा राम को रुपया दे कर उसे बच्चों का एक स्कूल खोलने पर राज़ी कर लिया था. स्कूल चलाने में यह तय पाया था कि स्कूल घसीटा राम का होगा. घसीटा राम के नाम से चलेगा. स्कूल में बच्चों की जो फीस आयेगी वह घसीटा राम की होगी पर स्कूल चलाने का प्रबंध सेठ जी के हाथ में होगा. बाकी हर काम सेठ जी की मरजी से होगा. स्कूल का सारा खर्च सेठ जी देंगे. स्कूल में बड़े-बड़े अमीरों के बच्चे दाखिल किये जायेंगे और बच्चे. स्कूल की वैन से, आया जाया करेंगे रुपये की चमकदमक में घसीटा राम को उन बदमाशों की गहरी चाल समझने की फुर्सत नहीं थी.

कहते हैं हर आदमी के दो अलग-अलग रूप होते हैं. एक वह जो साक्षात साकार होता है और दूसरा वह जो उसके अन्दर छुपा होता है. घसीटा राम का बाहरी रूप सैंकड़ों बुराईयों की जीती जागती तस्वीर है और उसका अन्दर का रूप साफ सुथरा सच्चा और ईमानदार है.

पिछले दिनों घसीटा राम का सच्चा और ईमानदार रूप साक्षात उसके अन्दर से बाहर निकल आया था अब उसके घर में एक की बजाय डबल रोल के दो घसीटा राम थे. एक मक्कार और चालबाज घसीटाराम और दूसरा शरीफ़ और ईमानदार घसीटा राम. अब शरीफ और मक्कार घसीटारामों में जबरदस्त खींचातानी शुरू हो गई थी. शरीफ घसीटा राम ने बदमाश घसीटा राम को स्कूल चलाने वाले जालसाज सेठ और मुनीम से खबरदार किया. उसे ईमानदारी के रास्ते पर चलने की सलाह दी. पर मक्कार घसीटाराम अपनी हेराफेरी छोड़ने को तैयार न था. इस बहस में नौबत यहां तक आई कि दोनों घसीटाराम एक दूसरे की जान के दुशमन बन गये. बुरे घसीटाराम ने अच्छे घसीटा राम को चाय में जहर देना चाहा. जहर मिली चाय पीने या ना पीने की खींचातानी में मक्कार घसीटा राम के हाथ में एक मोटा सा डंडा आ गया जो उसने अपने ईमानदार रूप के सर पर दे मारा और डंडा खाते ही ईमानदार घसीटा राम का बोलो ही राम हो गया. मौका मिलने पर शरीफ घसीटा राम की लाश को मिट्टी का तेल डाल कर जला दूंगा, यह सोच कर मक्कार घसीटा राम ने उसे घसीट कर बाथ रूम में बन्द कर दिया.

फिर स्कूल की वैन आई. सेठ जी और मुनीम जी जाने कब से मौके की ताड़ में थे. उन्होंने बच्चों को वैन में भरा. घसीटा राम को भी वैन में बिठाया और उन सब का अपहरण कर लिया.

स्कूल घसीटा राम चला रहा था. इस के पीछे असल हाथ किन लोगों का है, यह किसी को पता न था. इस लिये पुलिस एक ही नतीजे पर पहुंची कि बच्चों का अपहरण घसीटा राम ने किया है. इसके बाद क्या हुआ? यह आगे प्रस्तुत है.

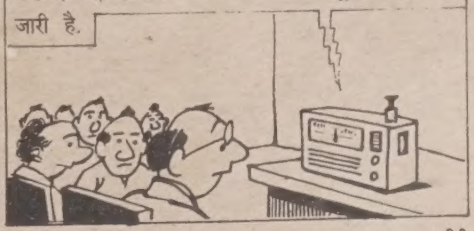

घसीटा राम को आप बहुत करीब से जानते हैं उसके बारे में कोई खास बात मालूम है?

एक ही खास बात मालूम है कि रुपया कमाने के लिये वह कुछ भी कर सकता है.

मतलब है अमीरों के बच्चे अपहरण कर सकता है?

हम जैसे गरीबों का भी अपहरण कर सकता है. सब से अजीब बात यह है इन्सपैक्टर कुमार कि अपहरण से पहले एक बार घसीटा राम ने हम से कहा, कि वह शरीफ आदमी बन गया है, उसने हेराफेरी की नीयत से जो स्कूल खोला है उसे वह बन्द कर देगा. थोड़ी देर बाद जब हम उस से फिर मिलने गये तो वह अपने कमरे में मरा पड़ा था.

मैंने कमरे का दरवाजा तोड़ा तो घसीटा राम जिन्दा था.

और फिर वही मक्कारी की बातें कर रहा था.

घसीटा राम मरा पड़ा था. फिर घसीटा राम जिन्दा था?

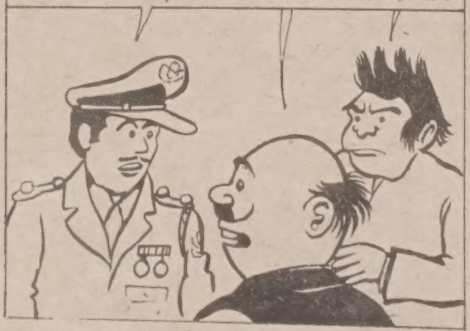

नज़र को धोखा हुआ होगा.

नज़र को तो कोई धोखा नहीं हुआ था. पर मोटू पतलू के कानों को धोखा हुआ होगा.
जब उसने कहा था कि मैं शरीफ़ आदमी बन गया हूं

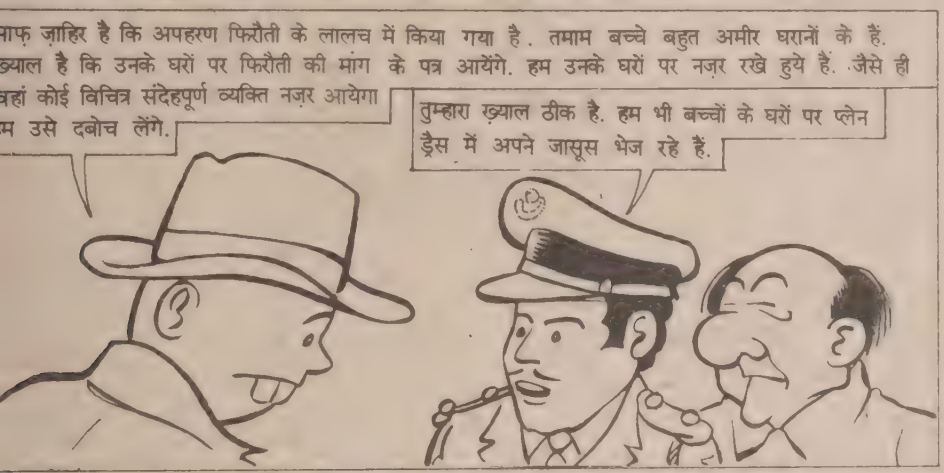

न्या तुम बता सकते हो कि वह बच्चों को लेकर कहां ना सकता है ?
जहन्नुम में जा सकता है और कोई दूसरी जगह नहीं है, जहां वह आसानी से जा सके.
इन्स्पैक्टर कुमार, मैं बहुत पुराना और कामयाब प्राईवेट डिटैक्टिव हूं.मैं और जूडो मास्टर मिल कर इस केस की छानबीन कर रहे हैं. हमें आशा है कि जल्दी ही हम इस केस की गुत्थी को सुलझा लेंगे.
ताफ़ ज़ाहिर है कि अपहरण फिरौती के लालच में किया गया है. तमाम बच्चे बहुत अमीर घरानों के हैं. ख़्याल है कि उनके घरों पर फिरौती की मांग के पत्र आयेंगे. हम उनके घरों पर नज़र रखे हुये हैं. जैसे ही वहां कोई विचित्र संदेहपूर्ण व्यक्ति नज़र आयेगा म उसे दबोच लेंगे.
तुम्हारा ख़्याल ठीक है. हम भी बच्चों के घरों पर प्लेन ड्रैस में अपने जासूस भेज रहे हैं.
मोटू पतलू के घर पर इन्सपैक्टर कुमार से बातचीत करने के बाद, डिटैक्टिव चेला राम, जूडो मास्टर और आचार्य तुर सैन शास्त्री उल्लू दी ग्रेट अपनी जासूसी के लिये बाहर निकल पड़े.
ऐसा भी तो हो सकता है कि फिरौती ले कर बच्चों को छोड़ने की बजाय घसीटा राम ने बच्चों का अनाथ आश्रम खोलने की योजना बनाई हो.

क्या उल्लुओं जैसी बातें कर रहे हो ! घसीटा राम का अपना घर क्या किसी अनाथआश्रम से कम था.

ठीक कह रहा है आचार्य चतुर सैन शास्त्री उल्लू दी ग्रेट. अनाथआश्रम से भला उसे क्या लाभ हो सकता है.

ऐसा भी तो हो सकता है कि बच्चों को घसीटा राम की मूछें इतनी पसंद आई हों कि बच्चों ने ही घसीटा राम का अपहरण कर लिया हो.

इसका मतलब है बच्चे उसे चिड़िया घर ले गये होंगे.

इसका मतलब है हम घसीटा राम को चिड़िया घर उस जंगले में ढूंढें जहां से तुम भाग कर आये हो

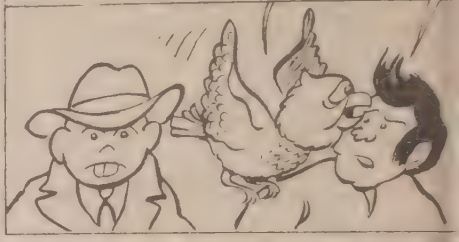

ऐसे ही जासूसी की तो तुम दोनों मेरी डिटैक्टिव कम्पनी का बेड़ा गर्क करा दोगे. अरे सब से पहले इस प्रश्न पर विचार करो कि घसीटाराम के स्कूल में और टीचर भी थे. और दूसरा स्टाफ भी था. वे सब के सब भी गायब हैं.

इसका मतलब है इस अपहरण में घसीटाराम अकेल नहीं है.

यह हुई ना चतुरसैन की चतुराई वाली बात.

तो फिर सब से पहले घसीटाराम के घर चलो, वहां से शायद उसके दूसरे साथियों के बारे में कोई क्लू मिल सके.

दूसरी ओर घसीटाराम बच्चों के साथ एक बहुत ऊ बिल्डिंग के ऊपर वाली मंजिल में कैद था.

वहां बच्चे मजे में थे. उनकी पूरी देखभाल की जा रही थी और उनकी हर सुविधा का पूरा ख्याल रखा जा रहा था.

दूसरे कमरे में घसीटा राम के मजे की यह हालत थी.

बेड़ा गर्क हो इस चार सौ बीस सेठ का और इसके मुनीम का.

बच्चे मजे में हैं और मुझे सूली पर लटका दिया है. गेहूं के साथ घुन पिसने वाली बात तो सुनी थी.

पर यहां गेहूं को आईस्कीम खुलाई जा रही है और घुन को पीसा जा रहा.

अरे ओ माईडियर गणेश जी के बॉय फ्रैंड चूहे ऊपर चढ़ कर रस्सी कुतर दे अपने दांतों से तेरे दांतों में सोने की कीले जड़वा दूंगा मैं.

वाह, वाह, तेरे बच्चे जीयें मोतियों वाले चूहे दी प्रेट. जरा अपने दांतों का कमाल दिखा दे आज.

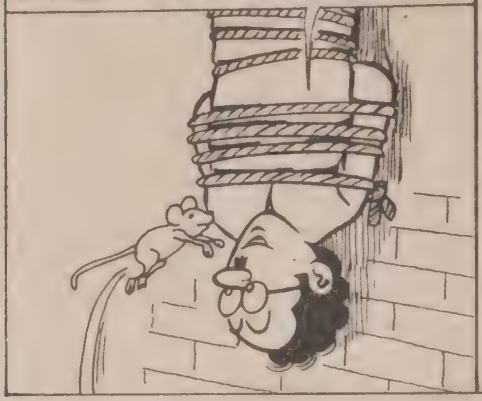

अरे तेरा मुंह काला हो करेले की दुम, तुझे यह रस्सी दिखाई देती है. जिसे तू कुतर रहा है.

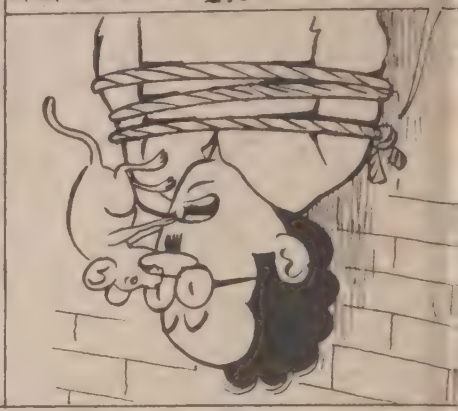

एशियन गेम्ज़ का चैम्पियन बनना है तो और हाई जम्प लगा.

यह हुई ना काम की बात. थोड़ी सी रस्सी रह गई है, उसे भी कुतर दे जल्दी से. मैं तेरी सोने की मूर्ति बना कर उसे रोज दूध से नहलाया करुंगा.

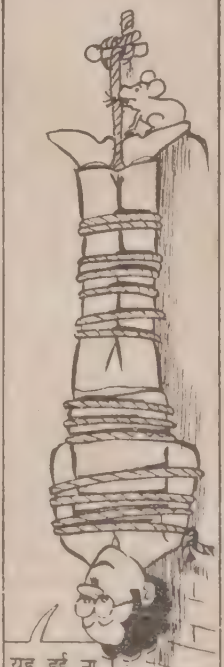

तेरी गोबर की मूर्ति बना कर उस पर मोरी का पानी डाला करूंगा. मुझे इतनी ऊपर से गिराया है कि मेरी चांद का चांदनीचौक बना दिया है.

गालियां खा कर भी चूहे ने घसीटा राम से यारी निभाई और घसीटा राम की सारी रस्सियां कुतर दीं.

तेरे बाल बच्चे जीयें मेरे मामा. मेरे बाल बच्चे अगर इस जन्म में कभी हुये तो बीस बरस तक तेरी जान को दुआयें देंगे.

दरवाजे तो बन्द हैं पर वह खिड़की खुली है. उस से बाहर कूद कर भाग जाऊं.

अरे बाप रे

इतनी ऊंचाई से कूदा तो मेरी हड्डियों का भीमसैनी सुरमा बन जायेगा.

फिर भी कोशिश तो करूं

इस पाईप लाईन से उतरने की.

जान बचा कर भागने की कोशिश में घसीटा राम हिम्मत तो कर बैठा पर इतनी ऊंचाई से नीचे उतरना तो रहा एक तरफ़ अब वह वापस ऊपर चढ़ने के काबिल भी नहीं रहा था.
तभी नीचे से गैंग वालों ने उपर लटके घसीटा राम को
देख लिया.
अरे यह पागल रस्सियां तुड़ा कर कहां आ लटका.
जल्दी से ऊपर पहुंचो
भगवान के लिये मुझे बचा लो.
काम तो तुम ऐसा कर रहे हो कि जी चाहता है भगवान
के लिए तुम्हें नीचे धक्का दे दें.

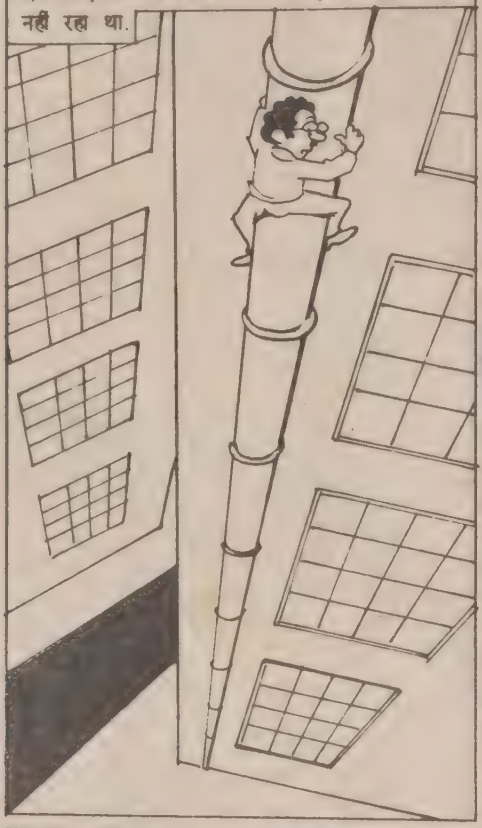

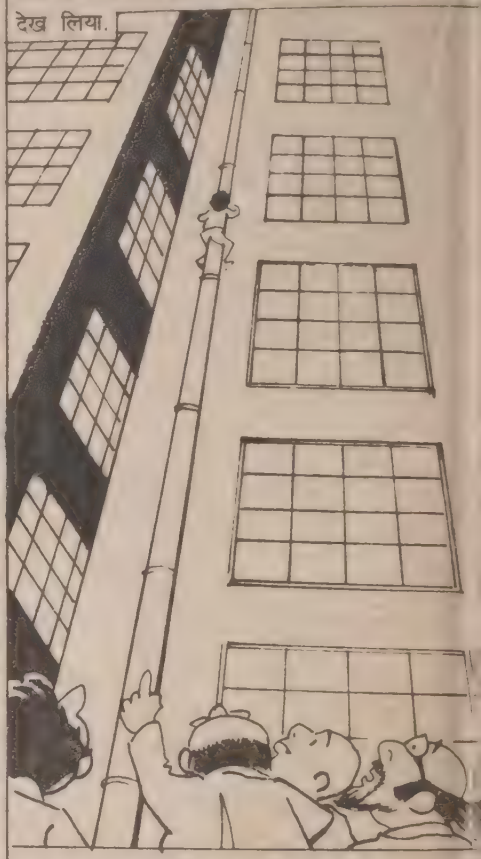

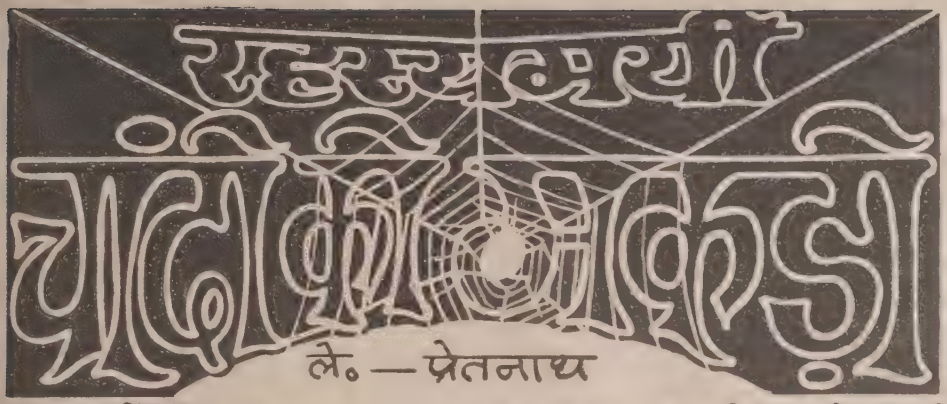

भाग-९

'नहीं, वह बोला, 'जब तक हम 'चांदी की मकड़ी' प्रिंस जोरो के पास पहुंचा न दें, डयूक स्टीफन अपने षडयंत्र में सफल हो जायेगा।'

'ओह' श्याम ने घबराते हुए कहा, यह तो बहुत बुरा हुआ आओ मेरी सहायता करो, दुबारा देखता हूं हो सकता है मुझे दिखी न हो।'

इस बार राजू और महिन्दर ने उसकी पूरी तालाशी ली जेबें बाहर निकाल कर पेन्ट की मोहरी के मोड़ इत्यादि हर जगह भली भांति खोजा, परन्तु खोज करते समय भी उन्हें पूरा विश्वास था कि 'मकड़ी' मिलेगी नहीं।' 'सोचो श्याम !' राजू ने दोबारा श्याम से पूछा, मकड़ी तुम्हारे हाथ में थी, तुमने उसका क्या किया ?'

श्याम ने सोचने का बहुत प्रयास किया और बोला, मुझे कुछ पता नहीं, मुझे तो आखिरी बात दरवाजे पर जोर-जोर से धड़धड़ होना और खिड़की से रूडी का आना ही याद है। उसके बाद मुझे कुछ भी याद नहीं केवल रूडी का बालकनी में मेरे ऊपर झुक कर खड़ा होना ही याद है।

'थोड़ी सी याद खो देना, 'राजू अपना होंठ काटता हुआ बोला।' जब किसी के सिर पर प्रहार होता है, यह बहुत असाधारण बात नहीं है कि कुछ देर पहले हुई बातें वह बिलकुल भूल जाये। कभी-कभी कुछ दिन पहले की बातें भूल जाती हैं, तो कभी कभी कुछ मिनट पहले की याददाशत खो जाती है। अक्सर धीरे-धीरे यह खोई याददाशत वापिस आ जाती है परन्तु सदा ऐसा नहीं होता। लगता है श्याम को यही हुआ है, जब उसका सिर बालकनी से टकराया, उसे पिछले तीन चार मिनट में घटा सब कुछ भूल गया।'

'मेरे ख्याल से भी ऐसा ही कुछ हुआ है, 'श्याम ने लम्बी सांस छोड़ कर अपने सिर पर लगी चोट पर हाथ फेरते हुए कहा।' मुझे कुछ-कुछ याद

पड़ता है कि मैं कमरे में चांदी की मकड़ी को अच्छी सी जगह छिपाने के प्रयास में इधर-उधर भाग रहा था। मैं बहुत घबराया हुआ था क्योंकि मैं अच्छी तरह सोच रहा था कि गद्दे या दरी के नीचे या अलमारी में उसे छिपाने का कोईलाभ नहीं था।इन जगहों पर मकड़ी के तुरन्त ही ढूंढ़े जाने का अन्देशा था।

'मेरे ख्याल से स्वाभाविक तो मुझे देखते ही मकड़ी को जेब में डालना होगा, 'रूडी बोला और फिर जब तुम रस्से से नीचे गिरे तब शायद मकड़ी तुम्हारी जेब से बाहर गिर गई होगी।'

हो सकता है जब मैं बाहर भागा मकड़ी मेरे हाथ में ही थी,' दुखी से स्वर में श्याम बोला। और शायद छज्जे पर उतर कर चलते समय वह मेरे हाथ से कहीं गिर गई होगी। हो सकता है मकड़ी छज्जे पर ही गिरी हो या फिर आंगन में गिरी होगी।'

काफी देर चुप रहने के बाद रूडी बोला, 'यदि मकड़ी आंगन में गिरी होगी तो उन्हें अवश्य मिल जायेगी, और हमें इसकी खबर मिल जायेगी। परन्तु यदि उन्हें मकड़ी आंगन में न मिली—'

उसने इतना कह कर ऐलीना की ओर देखा, जिसने उत्तर में सिर हिलाया।

'डयूक स्टीफन के आदमी शायद तुम्हारे कमरे में मकड़ी को नहीं ढूंढ़ेंगे' वह बोली, 'हो सकता है उनका ख्याल हो कि मकड़ी तुम लोगों के पास ही है। इस अवस्था में कल रात को हम लोग फिर से कमरे में जाकर ढूंढ़ेंगे।'

भागने की तरकीब—

लम्बी काली रात में तीनों लड़के महल की छत पर सन्तरी की कोठरी में छिपे रहे। ऊपर की छत पर इन्हें कोई ढूंढ़ने नहीं आया क्योंकि इनके नीचे की ओर भाग निकलने के चिन्ह बहुत ही साफ थे। बालकनी से लटकता रस्सा तथा तहखानों के दरवाजे पर गिराया गया राजू के रूमाल ने ढूंढ़ने वालों को लड़कों से दूर कर दिया था।

रूडी और ऐलीना के जाने के बाद तीनों लड़के लकड़ी के बेंचों पर लेट गये। आराम बेंच तथा सारी श्याम की घटनाओं के बावजूद लड़के शीघ्र ही गहरी नींद में सो गये।

अगले दिन सुबह को सूरज निकलने के बाद महिन्दर जम्हाई लेता उठा, राजू पहले ही उठा हुआ था और कुछ कसरत कर रहा था ताकि लकड़ी के बेंच पर सोने से अकड़ा बदन कुछ ढीला पड़ जाये। महिन्दर ने अपने जूते ढूंढ़े और उन्हें पहन कर खड़ा हो गया। श्याम अभी तक गहरी नीद में सोया था।

'बड़ा अच्छा दिन दिखाई दे रहा, है 'महिन्दर ने कोठरी में बने छोटे-छोटे झरोखों से बाहर देखते हुए कहा।' लेकिन मुझे लगता है हमें सुबह का नाश्ता, दोपहर का भोजन या रात का

शेष पृष्ठ २४ पर

बन्द करो बकवास

आपको पता लगता है कि

आप कलाकार हैं जब

जब किसी भी लड़की को देख आपका दिमाग उसे विभिन्न पोजों में देखने लगता है।

ड्रामों के लिये आपको भिखारी के रोल ऑफर किये जाते हैं क्योंकि उस रोल के लिये आपसे मेकअप नहीं करवाना पड़ता।

जब मुहल्ले में आपके सबसे निकट संबंध पनवाड़ी से होते हैं। सिगरेटों की खपत ही इतनी होती है।

जब आप कुछ खरीदने बाजार जाते हैं और वहां याद नहीं आता कि क्या खरीदने निकले थे।

पृष्ठ २१ से आगे

भोजन मिलने की कोई आशा नहीं है। यदि पता चल जाता कि कुछ खाने को कब मिलेगा तो मुझे अधिक अच्छा लगता।'

'मुझे तो ज्यादा अच्छा तब लगता जब मुझे पता लग जाता, यहां से हम कब निकल पायेंगे,' राजू ने उत्तर दिया। पता नहीं रूडी ने क्या प्लान बनाया है?'

'और मालूम नहीं उठने पर श्याम को याद आयेगा कि नहीं उसने चांदी की मकड़ी का क्या किया है?'

ठीक इसी समय आंखें मिचकाता हुआ उठ बैठा। 'हम लोग कहां हैं?' उसने प्रश्न किया, फिर उसने हाथ अपने सिर की चोट पर फेरा, 'ओह! मेरा सिर तो दुख रहा है, अब मुझे याद आया।'

'तुम्हें याद है तुमने चांदी को मकड़ी का क्या किया?' महिन्दर एकदम बोला।

परन्तु श्याम ने सिर हिला दिया 'मुझे याद है हम कहां हैं और मुझे याद है मेरे सिर पर चोट कैसे लगी, मतलब मुझे वह सब याद है जो तुमने मुझे बताया था, बस।'

'इस विषय में कोई चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है, श्याम, 'राजू बोला, 'हमें केवल प्रतीक्षा करके देखना है कि तुम्हारी याददाश्त अपने आप वापिस आती है या नहीं। आ भ सकती है और नहीं भी आ सकती।'

'ओह हो। महिन्दर ने झरोखे से देखते हुए कहा।' कोई छत पर आ रहा है और इस ओर ही देख रहा है

तीनों खिड़की के निकट एकत्रि हो गये।' एक झुका सा आदमी ढीले मटियाले कपड़े तथा बड़ा से ऐप्रन पहने सीढ़ियों के दरवाजे से छत पर आया था। उसने ध्यान से चारों ओर देखा उसके हाथ में झाड़ू तथा कूड़ा उठाने का डिब्बा था। चारों ओर दुबारा निगाह दौड़ा कर वह सफाई का सामान नीचे रख जल्दी-जल्दी सतंरी कोठरी की ओर आया।

'महिन्दर उसे अन्दर आने दो, यह कोई सिपाही नहीं है तथा मालूम पड़ता है उसे मालूम है हम यहां हैं' राजू ने कहा महिन्दर ने दरवाजा थोड़ा सा खोला और वह व्यक्ति तुरन्त अन्दर आ गया। अन्दर आते ही उसने राहत की सांस ली।

'रुको' वह बोला उसने कुछ अजीब से अंग्रेजी के लहजे में कहा।' मुझे देख लेने दो कोई मेरा पीछा तो नहीं कर रहा?' कुछ देर और सब झरोखे में से बाहर देखते रहे और जब कोई और नहीं आया तो सब आराम से बैठे।

'ठीक है, 'आदमी बोला, 'मैं सफाई करने वाला हूं मैं सीढ़ियों से ऊपर

खिसक आया हू रूडी से एक संदेश लाया हूं। उसने पूछा हैं श्याम नाम वाले को कुछ याद आया ?

उससे कह देना, नहीं, श्याम को कुछ याद नहीं है,' राजू ने उत्तर दिया।

'मैं कह दूँगा, और उसने धीरज रखने को भी कहा है, अन्धेरा अधिक हो जाने पर वह आयेगा। तब तक यह कुछ खाना है।' आदमी ने अपने बड़े से ऐप्रन की जेबों में हाथ डाल कर कागज में लिपटें सैन्डविच, फल तथा प्लास्टिक में भरा पानी सब बड़े से ऐप्रन को जेबों से निकाला।

लड़कों ने खाना लेकर संतोष प्रकट किया फिर आदमी तुरन्त ही जाते-जाते बोला—

'मुझे जल्दी से वापिस चला जाना चाहिए, नीचे सारे में हंगामा मचा हैं। परन्तु धीरज रखना, प्रिंस पाल तुम्हरी और हमारे युवराज की रक्षा करें।'

महिन्दर ने एक सैंडबिच खाना शुरू किया। इसी समय राजू श्याम को एक सैंडविच देते हुए बोला, "सारा दिन खाना चलाने के लिए राशन से खाना पड़ेगा। खास कर पानी का विशेष ध्यान रखना पड़ेगा। यह तो बड़ी अच्छी बात है कि रूडी और ऐलीना के मित्र महल में भी हैं।'

'यह हमारे लिए बड़े भाग्य की बात है, 'श्याम बोला।' वह रात को गाने बजाने वालों की कैसी संस्था के विषय में बात कर रहा था ? मेरे सिर में तो इतना दर्द था कि मुझे कुछ भी समझ नहीं आया।'

'कुछ तो तुम्हें पहले ही मालूम हैं. 'खाते-खाते राजू बोला।' परन्तु मैं तुम्हें फिर से सब कुछ बता दूंगा। रूडी कह रहा था कि जोरो के पिता के राज्य में ऐलीना और रूडी के पिता प्रधान मन्त्री थे। उसके कहने के अनुसार वह गाने वालों के उस मूल परिवार के ही हैं, जिन्होंने प्रिंस पाल का जीवन बचाया था।'

'जब डयूक स्टीफन रीजेंट बनें, उन्होंने रूडी के पिता को अवकाश ग्रहण करने पर मजबूर किया। उसी समय उन्हें डयूक स्टीफन पर शक हो गया और उन्होंने सब को इकठ्ठा करना आरम्भ कर दिया तथा पता लगाने लगे, कौन जोरो के वफादार हैं। यह छिपी संस्था डयूक स्टीफन के कामों की निगरानी करने के लिए बनाई गई थी। यह अपने को गाने वालों की पार्टी कहते हैं।

'कुछ यहां महल में सिपाही या अफसर हैं तथा मेरे ख्याल में जो आदमी खाना लाया था वह भी उसी पार्टी का होगा। कल रात इन्हीं वफादार मिन्सटरल पार्टी के लोगों को हमारी गिरफ्तारी के षडयंत्र का पता

शेष पृष्ठ ४१ पर

एक रात लॉकअप का ताला खुला रह गया.
पुलिस स्टेशन
नामी चोर
संतरी मजे से फिल्म सपनों का सौदागर देख रहा है. सरपट भाग ले चेले !
अब पुलिस वाले हमें हाथ तो लगा कर देखें, ।
हाथ कहां लगाते हैं पुलिस वाले लात लगाते हैं।
लगता है पुलिस हमारे पीछे लगी है।
भागते-भागते थक गये हैं. कोई अंधेरी जगह ढूंढ़ कर वहाँ छुप जाओ।
ग्रेट दीवानगी सरकस
सरकस में शेर का पिंजरा खुला रह गया था और शेर हवाखोरी के लिये बाहर निकल भागा था.
तभी वहां सरकस का चौकीदार गश्त पर आ गया.
अरे ! शेर अंदर बेखबर सो रहा है और पिंजरे का दरवाजा खुला पड़ा है।
मैं यहां न आता तो गज़ब हो जाता.

उधर शेर किसी जंगली जानकर का पीछा करते पुलिस स्टेशन पहुंच गया था।

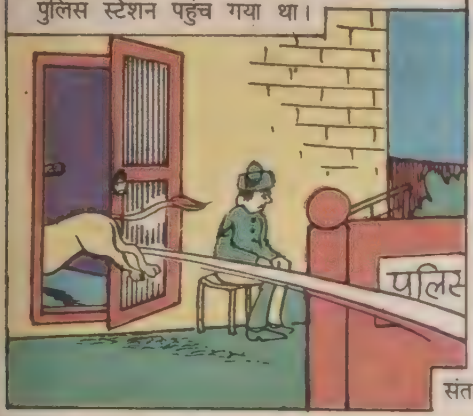

संतरी की नींद उचटी तो वह दंग रह गया

अरे बाप रे. जब हो गया. नामी चोर खर्राटे लगाकर सो रहे हैं. इन्हें खुले ताले का पता लग जाता तो रफूचक्कर हो जाते.

संतरी ने लपक कर लॉकअप का ताला लगा दिया।

सुबह हुई तो दिन की रोशनी में संतरी हवालात में बन्द नामी चोर को देख कर दंग रह गया तभी वहां सरकस का चौकीदार भी आ गया।

अरे नामी चोर की जगह नामी शेर.

मैं इसी शेर के गुम होने की खबर लिखवाने पुलिस स्टेशन आया हूं. यह तुम्हारे लॉकअप में आ फंसा। ऐसे ही तुम्हारे दो चूहे सरकस के पिंजरे में आ फंसे हैं।

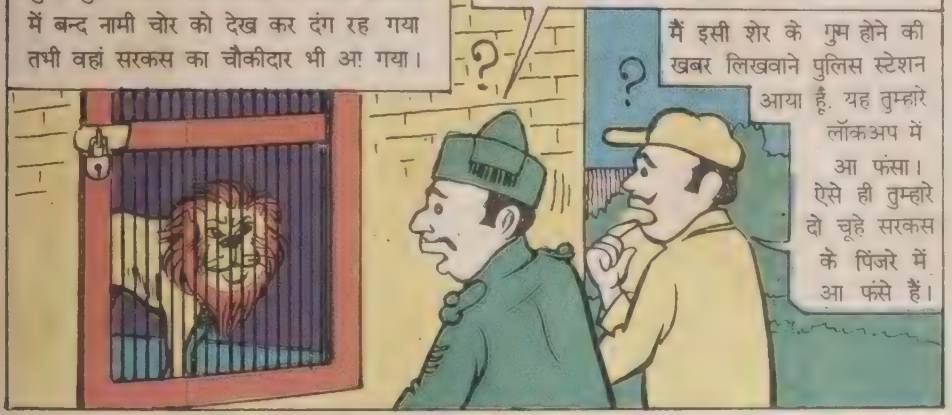

पुलिस ने सरकस में जा कर देखा तो वहां यह चूहे फंसे थे.

आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दलात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें

हरगुन जसवानी, मन्डला,: चाचा जी, ऐसी कौन सी चीज़ है, जिसे पाकर इन्सान कभी नहीं खो सकता ?

उ : आप द्वारा हम से पाया हुआ प्रेम.

आसनदास, धमतरी : मैं भी आप की तरह किसी पत्रिका का सम्पादक बनना चाहता हूं. क्या करूँ ?

उ : अपने अन्दर दीवानगी, पैदा कीजिए.

भगवान दास अरोड़ा, बिलासपुर : माई डीयर, अंकल, मेरी बिल्ली कुत्ते को डरा कर भगा देती है. क्या करूं ?

उ : यहां दिल्ली का चाचा बातूनी, अपने ही घर में डरते-डरते घुस पाता है. आप उससे बिलासपुर के बिल्ली कुत्ते की बात पूछते हैं.

लीलाधर कुमावत, डॉन, कोलीवाड़ा : चाचा जी, दूध में चावल डालने से खाने की लिये खीर बनती है. और मुहब्बत में जूते खाने से तकदीर बनती है. क्या आप यह मानते हैं ?

उ : अगर आप का यही तजुर्बा है, तो हम यह बात मान लेते हैं. पर हमारा तजुर्बा कहता है :

आया था अभी मेरे लब पे वफा का नाम,
कुछ दोस्तों ने हाथ में पत्थर उठा लिये.

सुरेन्द्र, खुराना, पानीपत : डीयर अंकल, दुनिया का प्रत्येक बुरा काम अंधेरे में क्यों किया जाता है ?

उ : किस ने बहका दिया आप को खुराना जी. आज कल दुनिया का हर बुरा काम दिन के उजाले में बीच सड़क पर और ढोल बजा कर किया जाता है.

मुकेश भटनागर, 'सुमन', किला चित्तौड़गढ़ : अगर अभिनेत्री हेमा मालनी का हाथ आप के हाथ में दे दिया जाये तो कैसा रहे ?

उ : क्यों हमारे नेत्रों में धूल झोंकना चाहते हो प्यारे भतीजे. उसका हाथ धमेन्द्र के हाथ में दे अब गुठली हमें देना चाहते हो ?

बजरंग शर्मा "लता" श्रीगंगानगर : चाचा जी, जिस दिल में प्यार हो, उसमें इतनी तड़प क्यों होती है ?

उ : इसके लिये एक शेर हाजिर है:

बेचैनियां समेट के सारे जहान की,
जब कुछ ना बन सका तो मेरा दिल बना दिया।

कैलाश नारायण, करैरा: सब सुखों का राजा कौन है ?

उ : नकद नारायण. क्या समझे श्री कैलाश नारायण ?

उमा शंकर शर्मा, रेवाड़ी : आप दीवाना पैन फ्रैंडस क्लब में लड़कियों के फोटो छापना कब शुरू करेंगे ?

उ : जब हमारे देश में शरीफ लड़के पैदा होने शुरू हो जायेंगे.

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

मदहोश

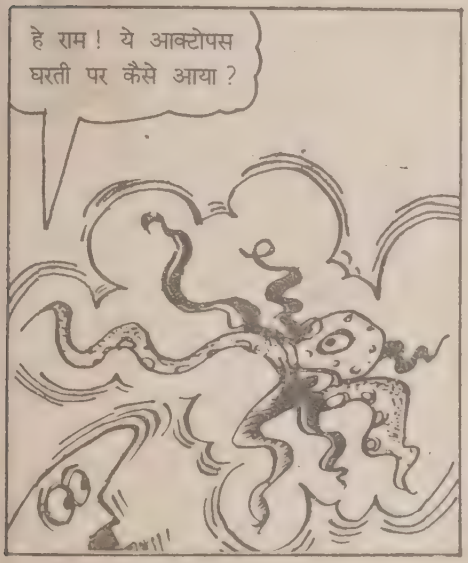
हे राम ! ये आक्टोपस धरती पर कैसे आया ?

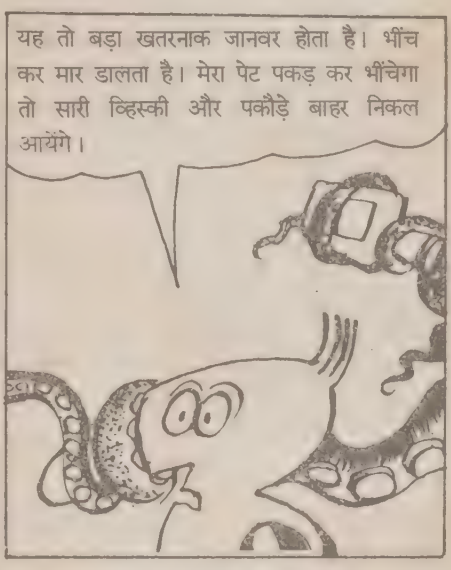
यह तो बड़ा खतरनाक जानवर होता है। भींच कर मार डालता है। मेरा पेट पकड़ कर भींचेगा तो सारी व्हिस्की और पकौड़े बाहर निकल आयेंगे।

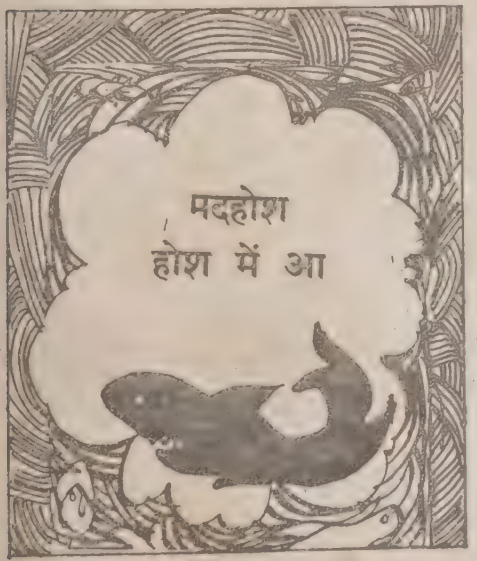
मदहोश
होश में आ

मैं दौड़ लगा कर आ रहा हूं इसलिए मेरे बाल बिखरे हैं और पटका ढीला हो गया है तो इसका मतलब जे है कि तू मुझे आक्टोपस की गाली दे ?

प्रेम नाम जहाज है

भारत में प्रायः प्रेमी सामाजिक बंधनों के कारण आपस में बात नहीं कर पाते—आमने-सामने के फ्लैटों या घरों में रहते हैं, एक दूसरे को देखते हैं लेकिन बात नहीं हो पाती। उनकी इन समस्याओं को देखते हुये हमने एक कोड खोज निकाला है। दो समुद्री जहाज मिलते हैं तो रंगीन झंडों द्वारा एक दूसरे को कोड संदेश भेज बात करते हैं। हमने प्रेम को जहाज मान ऐसे ही रंगीन विभिन्न डिजायनों को झंडों द्वारा बात करने का तरीका निकाला है। झंडा दिखाइये और संदेश मिल जायेगा। पतंग के कागज से झंडे बनाये जा सकते हैं। झंडों के कुछ नमूने पेश हैं।

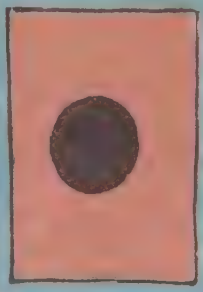

आज पिक्चर हाल पर मिलना।

मेरे मुंह पर मुंहासे निकले हैं। मैं आजकल बाहर नहीं जाती।

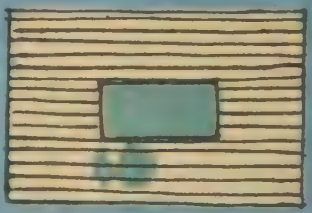

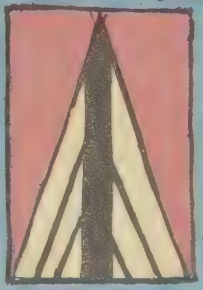

तुम्हारी कमर पतली है। देखो लचक न जाये।

तुम हड्डियों का ढांचा हो! आइसक्रीम खाया करो।

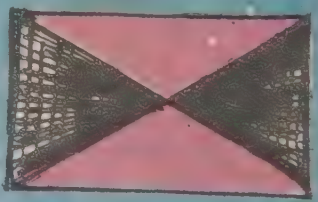

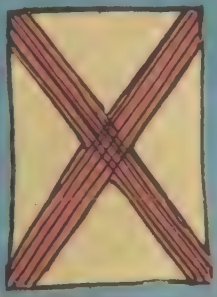

तुम खिड़की बन्द न रखा करो! तुम्हें देखना चाहता हूं।

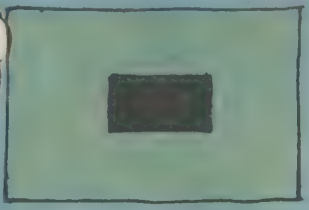

मैं आज नहीं मिल सकती।

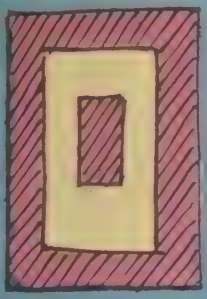

मेरा मित्र तुम्हारी सहेली से दोस्ती करना चाहता है।

मेरी मां मुझे घर से निकलने नहीं देती।

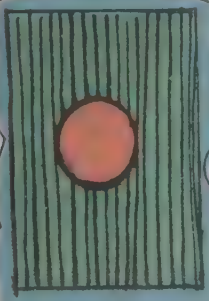

तुम मुझे घनचक्कर बना रही हो।

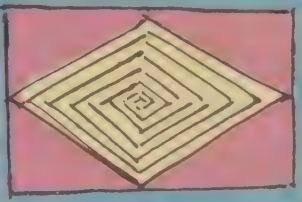

चांदनी रातों को छत पर आया करो।

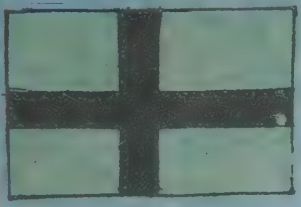

शाम को चौराहे पर मिलूंगी?

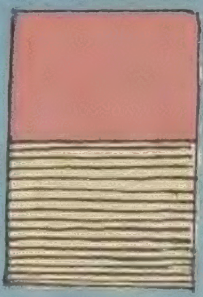

टॉपलैस ड्रैस में तुम बहुत अच्छी लगती हो।

क्यों और कैसे

प्र० : धूमकेतु या पुच्छलतारे के पूंछ क्यों होती है ? रमेश झलानी —करनाल

उ० : दूरबीन से देखने पर पुच्छलतारे के एक 'सर' तथा एक 'पूंछ' दिखाई देती है. इसका 'सिर' चमकती हुई गैसों का एक बादल होता है जिसे धूमकेतु की 'जटा' कहते हैं। इन जटाओं का व्यास १,०००,००० मील से भी अधिक होता है। इसकी गैसें इतनी हल्की होती हैं कि सूरज से आने वाली हवा इन्हें उड़ाती हैं। धूमकेतु की पूंछ तभी बनती है जब गैसें सूरज की हवा से पीछे की ओर को उड़ती हैं। जैसे-जैसे धूमकेतु सूरज के निकट आता जाता है इसकी पूंछ सूर्य की हवा के दबाव के कारण बड़ी होती जाती है। और धूमकेतु के सूरज से दूर अन्तरिक्ष की ठंडक की ओर अग्रसर होने पर भी सूर्य की हवा का दबाव गैसों के विपरीत बना रहता है। इसी कारण धूमकेतु की पूंछ हमेशा सूरज से दूसरी तरफ संकेत करती है।

कभी-कभी धूमकेतु की जटा में प्रकाश का चमत्कार छोटा सा बिन्दु दिखाई देता है. इस प्रकाश बिन्दु को धूमकेतु का केन्द्रक कहते हैं. खगोलज्ञों का मत है कि केन्द्रक एक बहुत बड़ी हिमगेंद —बर्फ़ तथा धूल कणों से बनी लगभग आधी मील व्यास का होता है.

अधिकतर धूमकेतु सूर्य की कक्षा में घूमते हुए एक लम्बोतरा ग्रहपथ लेते हैं अर्थात इनका पथ एक लम्बे मोटे सिगार के समान दिखाई देता है. एक धूमकेतु अपना चक्कर पूरा करने में हज़ारों साल भी ले लेता है. एक शताब्दी में तीन या चार बार एक धूमकेतु सूर्य के इतना पास से गुजरता है कि उसकी पूंछ आसानी से देखी जा सकती है. हमें धूमकेतु तभी दिखाई देता है जब कोई सूर्य के अधिक निकट से गुजरता है. तब सूर्य की गर्मी धूमकेतु के केन्द्रक की बर्फ़ को गैस में बदल देती है, तथा सूरज का प्रकाश इन गैसों का आयनन करता है और यह प्रकाश से चमक उठती है.

प्र०: रेत किस पदार्थ से बनती है ?

राम कुमार, पटना

उ०: ठोस चट्टानें जब हवा, बारिश तथा पाले इत्यादि के प्रभाव से टूट कर बहुत छोटे टुकड़ों (जो एक इंच के पांच सौवें भाग से एक इंच के दसवें भाग व्यास) में विभाजित हो जाती हैं तो रेत बन जाती है.

क्योंकि रेत चट्टानों में पाये जाने वाले सभी खनिज पदार्थों से बनी होती है इस कारण रेत में भी सभी खनिज हो सकते हैं. रेत में सब से अधिक भाग बिल्लौर की होती है क्योंकि यह अत्यन्त कठोर होता है और मिलता भी बहुतायत से है. इसके अतिरिक्त फेलडस्टार, केलसाईट, माईका, खनिज लोहा और बहुत थोड़ी मात्रा में गारनेट, टोरमेलीन और टोपाज इत्यादी भी रेत में पाये जाते हैं.

हर उस स्थान पर जहां चट्टानों पर ऋतुओं का प्रभाव पड़ता है रेत अवश्य होती है, सब से अधिक रेत समुद्रतट पर बनती है. वहां समुद्री लहरों का आसपास की चट्टानों से टकराना, रेत का चट्टानों से रगड़ खाना, तथा चट्टानों के खनिजों का समुद्र के खारे पानी से धुलना इत्यादि कारणों से समुद्रतट पर रेत भारी मात्रा में बनती है.

इसके बाद प्रश्न आता है रेगिस्तान की

शेष पृष्ठ ५२ पर

खेल खेल में

बोर्ग का विम्बलडन रिकार्ड

बोर्ग ने बिम्बलडन में लगातार ४१ मैच जीतने का जो अभूतपूर्व रिकार्ड स्थापित किया उसका दो बर्षों का विवरण पिछले अंक में आपने पढ़ा यहां प्रस्तुत है आगे के मैच . . .

	हराया	देश	स्कोर
१९७८	विक्टर अमाया	अमरीका	8-9, 6-1, 7-6, 6-3, 6-3, 6-2, 6-2, 6-4
	ज्याफ मास्टर्स	आस्ट्रे.	6-2, 6-4, 8-6,
	सैंडी मीयर	अम.	5-7, 6-4, 7-5
	टॉम ओकर	हालैंड	6-4, 6-4, 6-4
	जिमी कानर्स	अमरीका	6-2, 6-2, 6-3
1979	टॉम गोरमान	अम.	3-6, 6-4, 7-5, 6-1
	विजय अमृतराज	भारत	2-6, 6-4, 4-6, 7-6 6-2
	हैंक फिसर	अम.	6-4, 6-1, 6-3
	ब्रियन टीचर	अम.	6-4, 5-7, 6-4, 7-5
	टॉम ओकर	हालैंड	6-2, 6-1, 6-3
	जिमी कानर्स	अम.	6-2, 6-3, 6-4
	रॉस्को टैनर	अम.	6-7, 6-1, 3-6, 6-3, 6-4
1980	इस्माइल एल शफी	मिस्र	6-3, 6-4, 6-4
	शलोमो गलिक्स्टीन	इसरायल	6-3. 6[illegible]
	रॉड फ्रॉले	आस्ट्रेलिया	[illegible]
	बालास्ज ट[illegible]	[illegible]री	[illegible]
	जीन मेयर[illegible]	[illegible]म.	[illegible]
	ब्रियन गॉट[illegible]	[illegible]म.	6[illegible]
	जॉन मैकेनर[illegible]	अम.	1-6, [illegible]
1981	[illegible]ीटर रैनर्ट	अम.	7-6, 6-[illegible]
	मैल पुर्सेल		6-4, 6-1, [illegible]

अंक
दीवाना

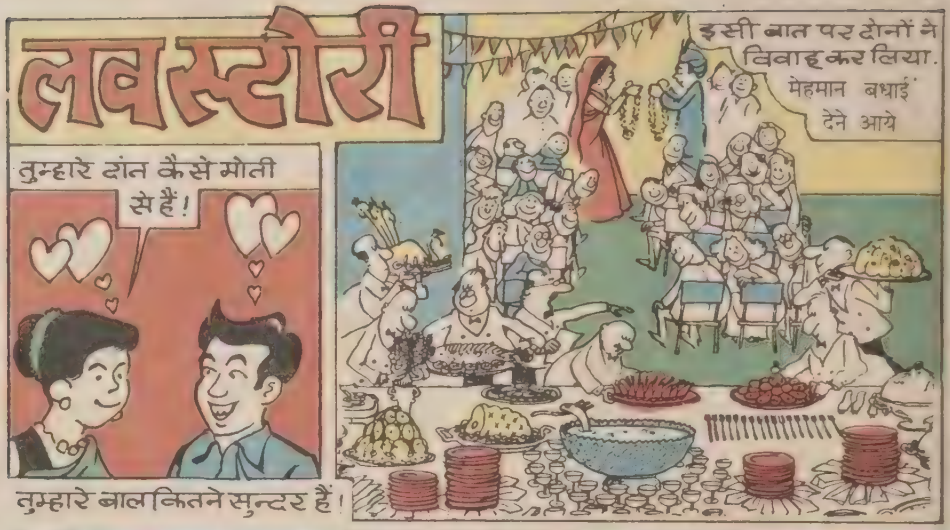

का चमत्कार छोटा सा
इस प्रकाश बिन्दु को धूमकेतु
कहते हैं. खगोलज्ञों का मत है कि
एक बहुत बड़ी हिमगेंद —बर्फ़ त
कणों से बनी लगभग आधी मील
होता है.

अधिकतर धूमकेतु
घूमते हुए एक लम्बोत
अर्थात इनका पथ एक
समान दिखाई देता है.

ऋतुओं का प्रभाव पड़ता
है, सब से अधिक रेत
वहां समुद्री लहरों का
टकराना, रेत का च
चट्टानों के
पानी से धुलना
पर रेत भारी म
इसके बाद प्रश्न

शेष पृष्ठ ५

आज का काम कल पर छोड़ो

कल काम का रेट ज्यादा मिलेगा

दीवाना

दीवाना चिपकी

पृष्ठ १० से आगे

ने भी तो कहा है—

''गुजारी हैं खुशी की चन्द घड़ियां
उन्हीं की याद मेरी जिंदगी है''

''यह तो जिंदगी से एक तरह का पलायन है।''

''आप इसे पलायन कह लीजिए, लेकिन आपको स्वीकार करना पड़ेगा कि ऐसे पलायन पर जिंदगी का अगर संघर्ष कुर्बान किया जा सकता है।

''आप तो संघर्ष से इस तरह बिदकते हैं, जैसे वह नूतनता न हो, बारूद हो।''

''कभी आपने यह भी सोचा कि संघर्ष आपको कहां ले जा रहा है। शिक्षा के कारण जहालते आम हो गयी है। नैतिकता की आड़ में अनैतिकता का प्रदर्शन किया जा रहा है।''

''कसूर शिक्षा और नैतिकत का नहीं, इंसान का है, जो इनका उपयोग करता है।''

तभी तो हम कहते हैं, लानत भेजिये इन्सान पर' भंग पीजिये ! एल. एस. डी. की गोली खाइए। फिर देखिए, जिंदगी कितनी खूबसूरत लगती है। आप महसूस करेंगे, जैसे रिमझिम-रिमझिम बरखा हो रही है। वातावरण में जलतरंग बज रहा है। परियां नाच रही हैं। कोयल कूक रही है और लाल-लाल गुलाबों पर स्याह रंग के भंवरे मंडरा रहे हैं।

''लगता है, आप यथार्थ के बजाय सपने ज्यादा पसन्द करते हैं।''

''सपना शायरी है। यथार्थ गद्य है।''

''अगर सारे लोग आपका अनुसरण करने लगें, तो दुनिया का कारोबार कैसे चले ?''

''दुनिया का कारोबार चलाने के लिए सिरफिरों की कमी नहीं। वह लोग जो अभी तक इस आत्म-प्रवंचना में ग्रस्त हैं कि इंसान का अगला उद्देश्य अधिक-से-अधिक रुपया कमाना है, दुनिया का काम-धंधा चलाते ही रहेंगे।''

''क्या आपको दौलत से नफरत है ?''

''जी हां ! मेरे हिप्पी बनने का कारण ही मेरे पास जरूरत से ज्यादा दौलत का होना था। कई वर्ष ऐश्वर्य की जिन्दगी बिताने के बाद मुझे हर तरह की विलासिता से नफरत हो गयी और मैंने हिप्पी बनने का फैसला कर लिया।''

''तो क्या हिप्पी बनने के बाद आपको शान्ति मिल गयी ?''

''इसी की तलाश में मैं आपके देश में आया हूं ?''

''लेकिन आप तो भंग और चरस में शान्ति ढूंढ़ रहे हैं। ऐसा तो आप अपने देश में भी रहकर कर सकते थे। फिर इतना सफर करने की क्या जरूरत थी ?

''जो मजा भंग पीने में आता है, वह अपने वतन में कहां। खुदा की कसम ! यहां आकर तो ऐसा महसूस होता है, जैसे हर तीसरे शक्स ने भंग पी रखी है और ऐसी अजीबोगरीब हरकतें कर रहा है, जिन्हें देखकर तबियत खुश हो जाती है।''

''यह तो आप मजाक या व्यंग कर रहे हैं। आपने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया।''

''आपके सवाल का जवाब तो आपका एक शायर पहले ही दे चुका है। आपने उसका यह शेर सुना होगा:

सुकूने-दिल जहां ने बेशी-कम यें ढूंढ़ने वाले,
यहां हर चीज मिलती है, सुकूने-दिल नहीं मिलता।''

''तो फिर हिप्पी बनने से फायदा ?''

''किसी चीज का कुछ फायदा नहीं। मैं,

शेष पृष्ठ ५२ पर दीवाना

सिलबिल
पिलपिल

चाचा ग्रुप

तो बात अब तय समझ लो। हम तीनों मिल कर पॉप ग्रुप बनायेंगे और हरयानवी भाषा में डिस्को गानों के रिकार्ड तैयार करेंगे। एक भी रिकार्ड हिट हो गया तो इतने पैसे बनेंगे कि हमको ट्रैक्टर पर लाद कर अपने बैंक ले जाना पड़ेगा। बस एक बात की कमी है हमारे पास, हर पॉप ग्रुप में एक लड़की होती है।

देखते हैं।

मूंछ काट कर लड़की का पार्ट मैं करूंगा तो कैसा रहेगा।

यही ठीक है। फ़ोटो छपेगी तो कोई यह बता नहीं सकेगा कि यह एक लड़की है। मैं विग और दाड़ी पहन लूंगा क्योंकि हमने आज तक गंजा पॉप सिंगर नहीं देखा। हम तेरा नाम जूली रखेंगे, मैं अपना नाम क्या रखूं?

थमने अपने ग्रुप का नाम चाचा रखा है, मेरी सलाह मानों तो अपने नाम चार्ल्स और डियाना रखो। हा हा .....

CHACHA

जब से मैंने जूली का ड्रेस पहना है मेरे शरीर में अजीब सी गुदगुदी हो रही है। ऐसा लग रहा है जैसे मैं सचमुच ही लड़की हूं। चाट-पकौड़ी, दही-भल्ले और आइसक्रीम खाने के लिये तरस रहा हूं।

अरे, पोपट लाला तू यह क्या देख रहा है? अपने मुहल्ले में यह लड़की अब तक तो नहीं देखी थी। शायद कोई नई चिड़िया आयी है। यहां तो खूसट-जासूस रहते थे, वह चले गये?

पोपट लाल तू तो अपनी डयूटी निभा. लड़की देख सीटी बजाने की . . .
कितना स्मार्ट लगता है यह लड़का, सीटी बजाता हुआ तो यह और भी प्यारा लगता है।
अरे पोपट लाल, यह लड़की तो मुस्करा रही है। आज तक जब भी तूने किसी को देख सीटी बजाई या तो मां बहन की गाली सुनने को मिलीं या सिर पर जूते पड़े। इसको बुला कर देखता हूं क्या होता है।
मुझे बुला रहा है। दीवारों मे टकरा कर आ रहा है जैसे सलीम अनारकली रहा हो। जैसा भूखे प्यासे मजनू के की आहें लैला को चुम्बक की तरह खींच दिल अपने काबू में नहीं है। मेरे पैर मुझे खींच कर बाहर ले जा रहे हैं क्या इसी को कहते हैं ?
हैं! यह तो सचमुच बाहर आ गई और मेरी तरफ ही आ रही है। मैं ने आज तक किसी लड़की से बात नहीं की . . .मेरा गला सूख रहा है . . . पानी . . .
जूली जब मैंने तुमको देखा तो मुझ पर जैसे बिजली गिर पड़ी। मैंने आज तक सपनों में जिसे देखा था मेरी कल्पना जिस पत्थर को तलाश कर सुन्दर मूर्ति बनाती रही वह तुम ही थीं। तुम्हें मुझे देख कर कैसा लगा ?
मुझे लगा जैसे पिछले जन्म का बिछड़ा प्रेमी अचानक दिखाई दिया हो। दुनिया के खंडहर में मेरी आत्मा युगों से भटक रही थी जिसके लिये जैसे वह सामने आ गया हो।
अब कभी नहीं बिछड़ेंगे। आओ चांद तारों और सड़क की बत्तियों की कसम खायें।

पोपट लाल मुझे जल्दी घर जाना है।

जाना ही होगा कैस। यह जालिम दुनिया प्रेमियों को एक साथ नहीं देख सकती। दिल तो मेरा भी करता है कि हमेशा तुम्हारे पास रहूं लेकिन जमाने के रस्मो रिवाज और कानून रास्ते में दीवार बन कर खड़े हैं। रास्ता रोक रहे हैं।

प्रिये इतनी जल्दी मुझे छोड़ कर मत जाओ

मैं इन दीवारों को गिरा दूंगा। पहले यह आइस-क्रीम खाओ।

साला छोकरी पटा कर लाया है।

ICE

ऐ महाराज चौधरी मल जी आंखें खोलो! मैं कब से तुझ से बात कर रिया हूं लेकिन तू जबाब ही नहीं दे रिया है। क्या बात है . . .गया काम से

क्यों मेरी आंखों के सामने चौबीस घंटे पोपट लाल की तस्वीर घूमती रहती है। मुझे अपने तन बदन और भूख प्यास की भी सुध नहीं रही। चार बजे पोपट लाल से बुद्धा जयन्ती पार्क में मिलने जाना है और एक एक सैकिंड युगों की तरह बीत रहा है। अब इस तनमन पर मेरा अधिकार नहीं रहा।

क्या हो गया इसे? इसके सिर पर एक बाल्टी ठंडा पानी भी डाल दिया। पैरों के बाल जम्बूर से खेंचे लेकिन यह फिर भी बुत्त बना बैठा है . . . .

चौधरी साहब कुछ खबर भी है आपको आजकल घर में क्या हो रहा है। जब से हमने सिलबिल को जूली बनाया है वह बिलकुल ही बदल गया है।

क्या खट्टी चीजें ज्यादा खाने लगा है?

यही नहीं, ऐसे बैठे रहता है जैसे तपस्या कर रहा हो? अभी २ क्या हुआ आओ मैं दिखाता हूं।

अरे, अभी २ यहीं था . . . .कहां गायब हो गया, वह देखो बाहर सड़क पर निकल गया है! पता नहीं कहां जा रहा है?

जूली अब मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता। जल्दी से जल्दी तुम्हें अपना बनाना चाहता हूं ताकि यह विरह की घड़ियां खत्म हों।

जानता हूं। एक बार पकड़ा है तो जिन्दगी भर नहीं छोड़ूंगा। मैं समाज की सारी दीवारें तोड़ कर तुम्हें ले जाऊंगा। तुम्हारे लिये मैं सब कुछ छोड़ने को तैयार हूं केवल तुम्हें मेरा साथ देना पड़ेगा।

पोपट लाल तुम हाथ पकड़ने का मतलब जानते हो?

बन्द करो यह नाटक! यह सब क्या हो रहा है?

अब क्या होगा?

हाय डैडी!

देखिए साहब, आपने मुझे थप्पड़ मारा है, मैं इसी लिये चुप हूं कि आप जूली के डैडी हैं। मैं जूली से प्यार करता हूं कोई गुनाह नहीं। हम दोनों एक दूसरे के हो चुके हैं। मैं जूली से शादी करना चाहता हूं।

जूली से शादी करना चाहते हो तो अभी करवाये देता हूं शादी।

यह लो जूली के सैंडिल, यह रहा जूली का स्कर्ट, यह है जूली का विग यह जूली का ही शर्ट और यह रहे दो संतरे इन्हें लेकर शादी रचाओ या

कुछ करो। इनको निकालने के बाद बचा सिलबिल वह हमारा है और हम उसे लिये जा रहे हैं।

जिन्दगी में पहली बार प्यार किया उसमें भी धोखा।

ही ही ही।

सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये

चला था, इसलिये उन्होंने रूडी के पिता को इसकी खबर दे दी थी। तथा अतिशीघ्र कार्य कर लेने के कारण ही वे हमारी सहायता करने समय पर पहुंच गये थे। जब वे बच्चे थे उनके पिता महल में ही रहते थे और इसी कारण यह लोग महल के चप्पे-चप्पे से वाकिफ हैं। इसी खोज-बीन के कारण इन्हें गुप्त रास्तों, सुरंगों तथा बारिश के पानी को ले जाने वाले नालों की वह जानकारी है जो किसी और को नहीं है और यह बिना किसी को पता लगे आ जा सकते हैं। याद है न जोरो ने हमें बताया था कि यह महल पुराने महल के खंडहरों पर बनाया गया है?'

'वह सब तो ठीक है,' महिन्दर बोला, 'परंतु इस समय तो हम यहां छत पर फंसे हुए हैं। तुम्हारा ख्याल है रूडी और ऐलीना हमें यहां से बाहर ले जा पायेंगे—मेरा मतलब यदि जब तक हमें यहां कोई गिरफ्तार करने न आया तो।'

'उनका तो ऐसा ही ख्याल है, 'राजू बोला, 'मैं सोचता हूं उनका कुछ और मिन्सटरल लोगों को हमारी सहायता के लिए लगाने का है। हमें तो यहां से निकलना ही पड़ेगा ताकि वह टेप जो मैंने तुम्हें दिया था दूतावास तक पहुंच जाए। यह एक महत्वपूर्ण सबूत है।'

'कितना अच्छा होता यदि मैं जेम्स बांड होता महिन्दर बोला, 'परन्तु मैं जेम्स बांड नहीं हूं और न ही तुम जेम्स बांड हो? मेरे को एक डर सा है कि रूडी का हमें बचा कर निकाल ले जाने का प्लैन इतनी सुविधापूर्वक पूरा नहीं हो पायेगा जैसा रूडी की आशा है।'

'हमें पूरी कोशिश करनी चाहिए, यहां से निकल कर ही हम जोरो की सहायता कर पायेंगे। हमारा यहां आने का मकसद भी यही है। कुछ भी हो जब तक रूडी या ऐलीना का संदेश न मिले, हम कुछ भी नहीं कर सकते। बात-बात में महिन्दर क्या तुम्हें मालूम है, तुम अपना नाश्ता समाप्त कर आधा दोपहर का भोजन भी खा चुके हो।

महिन्दर ने खाने के लिये उठाया सैंडविच जल्दी से नीचे रख दिया।

क्रमशः

फैण्टम - जंगल शहर

तार . . .वाकर को . . .बाक्स ७ . . . मावीटान, बंगाला, कृपया तुरन्त बात करो . . . डियाना . . .
बाक्स७ . . .मि. वाकर . . .तार . . .वह कौन है ?
मि. वाकर
चलने फिरते भूत के लिये . . .
काश मैं इसे स्वयं ले जा सकता, दादाजी उसे देखने की मेरी बड़ी इच्छा है.
बहुत दूर है . . .तार का अर्थ है शीघ्र . . .फराका चिड़िया घने जंगलों में. बन्दर डाक से ही भेजना चाहिए.
FALK & BARRY 3/12
जंगल की रिले टीम, डाक ले जाती है.
बटुए में फैन्टम के लिये तार . . .
!
फैन्टम का तार . . .
धन्यवाद . . .
ची . . .ची . . .
बन्दर डाक
ची ची घने जंगल में चलते-फिरते भूत के पास जाओ.
सरदारों प्राचीन नक्शा दिखाता है . . .ललोंगो की धरती उत्तर की ओर आधे तालाब तक . . . वाम्बसी दक्षिणी आधा . . .
नहीं हम वाम्बसी वालों का पूरा तालाब है
नहीं हम ललोंगो इसके मालिक हैं . . .
FALK & BARRY 3/14
सरदारों की कौंसिल ने फैसला कर दिया है . . .पानी का हक पुराने नक्शे के अनुसार होगा.
ओह
ओह
सरदारों . . .सारे संसार में यदि फैसला दोनों ही दलों को पसन्द न आये तो सही समझो !
मुझे बातचीत पसन्द नहीं है प्राचीन काल में हम अपनी चाहत के लिये लड़ते थे
और ले कर अपने पास रखते थे.
अब हम बातें ही बातें करते हैं और फिर कहते हैं सब की विजय हुई.
इसका अर्थ है विजय किसी की भी नहीं होती
बातें मारने से तो बेहतर है. नहीं ?
मुझे हां कहना ही पड़ेगा . .

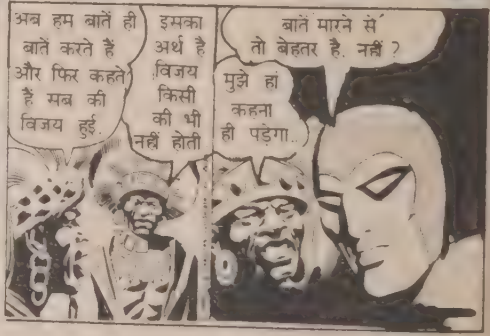

सरदारों की कौंसिल
सहायता के लिये धन्यवाद फैन्टम !
मैं यहा आमन्त्रित हो कर सम्मानित हुआ हूं, नमस्कार
हीरो इतना तेज नहीं ! घने जंगल पहुंचने की कोई जल्दी नहीं है. वे लोग वहां नहीं हैं.
ची ईई ची ई ई
वह तो चा ची है।
बन्दर डाक !
बटुरो के लिये एक केला लो ची ची अच्छे लड़के !
ची ई ई ची ईई
अकल वाकर के लिये तार, मतलब बहुत जरूरी है.
चलते फिरते भूत के लिये.
कटीना . . . जम्बा, चलो उन्हें ढूंढते हैं !
रेक्स उसे खोना मत !
कटीना और जूम्बा की ऐसी जोड़ी है जिसका कोई सामना नहीं कर सकता.
लकड़बग्घों को अधिक पता होता है.
वो रहे अंकल वाकर !
?
चलते फिरते भूत के लिये.
ची ची यह तार लाया था, मैंने सोचा यह बहुत जरूरी है. मैं आपको ढूंढ़ रहा था....
धन्यवाद, रेक्स . .
तार. . .किट वाकर. . .बाक्स ७ मार्वीटान. कृपया तुरन्त बात करो —डियाना.
तुरन्त ?
चलते फिरते भूत के लिये.
"तुरन्त"? क्या उसे कुछ हो गया या बच्चों को कुछ हो गया ?

क्रमशः

हमारे खेल

१९८२ में दिल्ली में होने वाले एशियाई खेलों को ध्यान में रख कर हम यहां पाठकों का परिचय हमारे देश में प्रचलित कुछ लोकप्रिय खेलों से करवा रहे हैं जिससे लोगों को पता लगे कि हम खेलों के क्षेत्र में उतने पिछड़े हुए नहीं हैं जितने दुनिया वाले सोचते हैं। कई खेलों में तो हमारा जवाब नहीं है।

फुटबाल

यह बहुत लोक प्रिय खेल है और एक राजनैतिक पार्टी के दो गुट आपस में खेलते हैं। दो नेता पार्टी में अपने २ चमचों की टीमें बनाते हैं और मैदान में आकर नारे लगा यह दावा करते हैं कि उसकी टीम ही असली पार्टी है। इसके बाद पार्टी के फर्नीचर को फुटबाल बना कर दोनों टीमें खेलती हैं। पार्टी के चुनाव चिन्ह संपति का अंतिम फैसला मुख्य चुनाव आयुक्त तथा सुप्रीम कोर्ट करती है। हमारे देश में हर पार्टी में यह खेल सर्वाधिक लोकप्रिय है। जनता पार्टी ने इसे लोकप्रिय बनाने में सबसे अधिक काम किया

वाटर पोलो

वाटर पोलो पहले हमारे देश में चोरी छिपे खेला जाता था लेकिन जैसे २ लोगों की शर्म उतरती गयी वैसे २ यह खुले आम खेला जाने लगा है। देश में इस खेल की राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त दो टीमें हैं। सैंट्रल पी. डब्लू डी की ओवरसीयर और इन्जीनियरों की टीम तथा दूसरी ठेकेदारों की टीम। सरकारी पैसा पानी की तरह बहा कर एक बड़ा टैंक भर दिया जाता है और विरोधी टीमें उस पानी में उतर कर इस पानी रूपी पैसे को गुब्बारों में भर २ कर एक दूसरे के गोल में डालने का यत्न करती हैं। इस खेल की सबसे बड़ी विचित्रता यह है कि दोनों टीमें विजयी मानी जाती हैं पराजय खेल देखने वाली जनता की होती है।

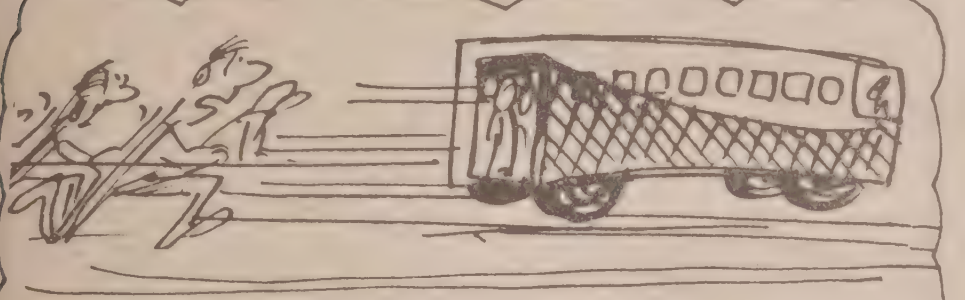

बसकेट बाल

बड़े शहरों में भारत में यह कम्पलसरी गेम है। यह खेल यात्रियों और नगर बस ड्राइबरों की टीम के बीच खेला जाता है। पब्लिक टीम सड़क के किनारे खड़ी होती है। बस तेजी से आती है और स्टॉप से बहुत आगे जाकर कुछ सैकिण्डों के लिये रुकती है। पब्लिक टीम के खिलाड़ी बस की ओर दौड़ते हैं। बस पहले ही ऐसे ठस लदी होती है जैसे कोकाकोला के क्रेट लदे होते हैं। बस के दरवाजे को गोल समझ और स्वयं को बाल मान खिलाड़ी अंदर घुसने की कोशिश करते हैं। जो स्वयं को गोल में बदल सके वह भाग्यशाली माने जाते हैं। जो रह जाते हैं वह मुंह लटका कर स्टाप पर लौट आते हैं जैसे बैटसमैन रन आउट होने पर पैवेलियन लौटता है।

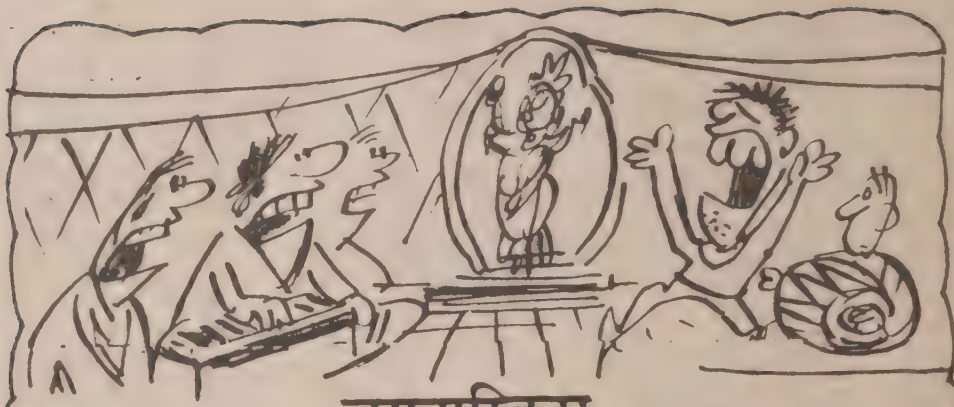

जगनास्किस

यह खेल रात को फ्लडलाइटस में खेला जाता है। शामियाना तान कर उसे इन्डोर स्टेडियम का रूप दिया जाता है और बगुला भक्ति की कला में माहिर खिलाड़ी इकट्ठे होकर रात भर जागरण के नाम पर शोर मचाते हैं। घटियाकिस्म के भजन बेसुरी आवाज में चिल्ला कर गाते हैं और डिस्को डांस की भौंडी नकल कर देवी की मूर्ति के सामने ऐसे ही कलाबाजियों खाते हैं जैसे फ्लोर एक्सर साइज कर रहे हैं। जो टीम सब से ज्यादा दूरी तक पड़ौस वालों को डिस्टर्ब करती है वह भक्ति गोल्डकप जीतती है।

पेट लिफ्टिंग

यह खेल ब्राह्मणों में विशेष लोकप्रिय है। श्राद्ध -ब्राह्मण भोजों के अवसर पर पेटू तौदियल ब्राह्मण इसकी चैम्पियन शिप आयोजित करते हैं ठूंस-ठूंस कर हलवा पूरी, लड्डू व खीर की सबसे ज्यादा मात्रा खाने के बाद जो खुद अपनी टांगों पर अपना पेट उटा कर घर ले जाते हैं वह चैम्पियन माने जाते हैं। लड्डु खाने की क्षमता के आधार पर इस खेल को तीन वर्गों में बांटा गया है। दो किलो लड्डु वर्ग, किलोवर्ग व तीन किलो वर्ग (इससे कम खाने वाले पुरोहित मान्यताप्राप्त खिलाड़ी नहीं माने जाते)।

लोन टैनिस

यह मैच तब खेला जाता है जब खिलाड़ी लोन यानि उधार लेकर अपना काम चलाता रहता है। दूसरी तरफ खिलाड़ी दुकान दार होता है जो लोन देता है। बाकी खेल क्रिकेट की तरह है दुकान दार तकाजों के बम्पर फैंकता रहता है खिलाड़ी बहाने बना कर डक करके स्वयं को बचाता रहता है। तन्ख्वाहवाले दिन दुकान दार ऐन मौक पर प्रकट होकर कैच कर सकता है! या जब जेबभरी हो तो बाजार में पकड़ कर रन आऊट कर सकता है। जब हिसाब चुकता होता है तो पारी समाप्त मानी जाती है।

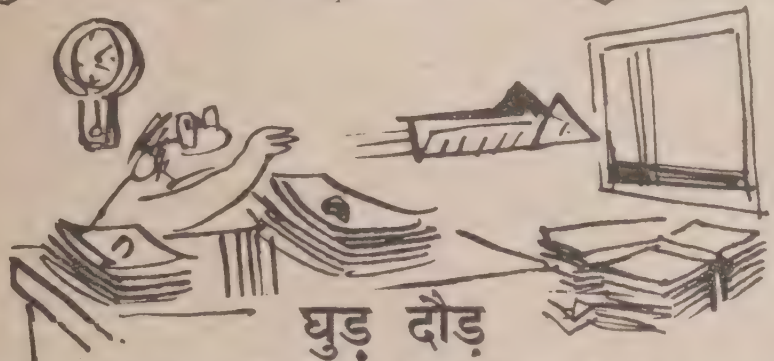

घुड़ दौड़

यह खेल हमारे देश के हर दफ्तर में खेला जाता है। कागजी घोड़े दौड़ाये जाते हैं। ठोस कुछ भी नहीं होता। एक छोटा सा काम करवाने के लिये इतने कागजी घोड़े दौड़ाये जाते हैं कि हर क्षण देश में लाखों डर्बी रेसें हो रही होती हैं। एक नलका लगवाने के लिये इतने घोड़े दौड़ते हैं जितने घोड़े लेकर चंगेज खां दुनिया को रौंदने निकला था। इन घुड़दौड़ों में जाकी, एल. डी. सी और यू. डी. सी. के नाम से पुकारे जाते हैं।

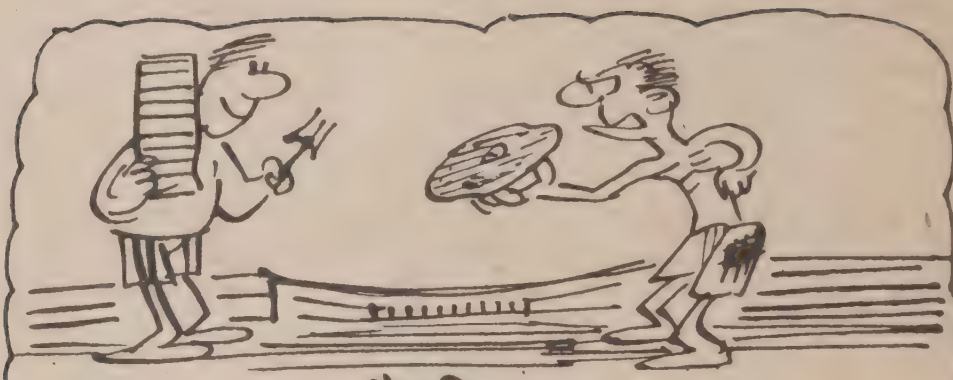

ब्रैडमिन्टन

यह मैच हमारे देश के दो वर्णों के बीच खेला जा रहा है। ब्रैड खाने वाला वर्ग यानि जो नाश्ते में ब्रैड बटरटोस्ट के रूप में या जैम मार्मलेड के साथ खाता है व दूसरा वर्ग है जो मिन्ट यादि पोदीना यानि चटनी के साथ सूखी रोटियों का कलेवा कर गुजारा करता है। वास्तव में यह गरीबों व अमीरों के मध्य चल रही रस्सा कस्सी है। इन दो वर्गों की लड़ाई में बीच में परांठे खाने वाला वर्ग है जो अम्पायर का काम करता है।

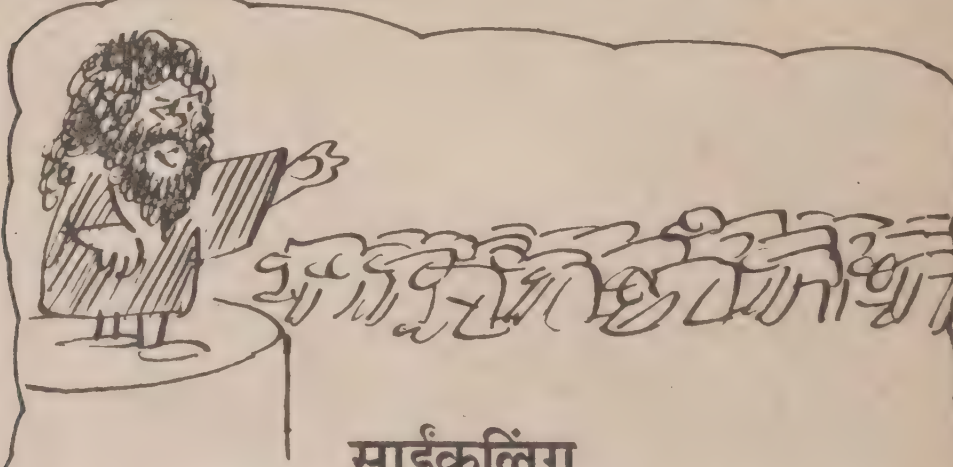

साईंकलिंग

इस खेल में अंधविश्वासी जनता खूब भाग लेती है। खेल कुछ ऐसा है कि एक आदमी स्वयं को साईं या बाबा या भगवान के नाम से ईश्वर का अवतार घोषित करता है। कुछ चमचे उसके इर्दगिर्द इकट्ठे हो जाते हैं उनकी सहायता से वह जादू के खेल दिखाता है और लोगों के झुंड़ों के झुंड इनके पीछे लग जाते हैं। साईंकलिंग के इस टूर्नामैंट में जिस अवतार की शरण में सबसे ज्यादा फारेन गोरी चमड़ी वाले चेले चेलियां आयें वह प्रसिद्ध होम्स शील्ड जीतता है।

बाधा-दौड़

इस बाधा-दौड़ में वह सारे भारतीय मां बाप शामिल होते हैं जिनके ब्याहने लायक लड़की हैं। शादी की इस दौड़ में बाधायें लड़के वाले प्रस्तुत करते हैं। बाधायें स्कूटर, फ्रिज, टीवी, सोफासैट, आलमारी व नकद कैश की फर्माइशों के रूप में रास्ता रोके खड़ी होती हैं। यह दौड़ बहुत पेचीदा होती है। अंतिम क्षणों तक खिलाड़ियों के डिस्कवाली फाई होने का डर रहता है।

कबाड्डी

यह खेल आवास कोलोनियों की गली-गली में खेला जाता है। एक खिलाड़ी साईकिल पर कबाड़ी करता हुआ आता है और गृहणी घर से निकल कर उसे रोकती है और पुराने अख
बोतल, टीन व डिब्बे निकाल लाती है फिर दोनों में भाव पर खैंचतान होती है। इस
यह है कि खेल खत्म होने पर दोनों पक्ष अपने २ को विजयी समझते

आशेत प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

सजय चौरसिया, कतरास गढ (धनवाद), १८ वर्ष क्रिकेट एव फिल्म

प्रेमशंकर विश्व कर्मा, विश्वकर्मा रेडियो सेन्टर, एम. एस. कालेज के पास, गजनेर रोड, बीकानेर

महेश ग्रोवर, १८२३, राजपुरा टाउन, जिला पटियाला, १७ वर्ष, पत्र-मित्रता।

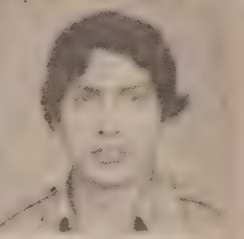

कंवल बख्शी, २४ न्यू ईदगाह, राजेन्द्र नगर, आगरा १५ वर्ष गरीबों की सेवा करना

रामानन्द कावरा, मारड़ा बाजार मेडता सिट्टी (राज.), १९ वर्ष, प्रतिमाओं मे संपर्क करना।

शहन शाह आलम द्वारा मो. ए. रहमान गुलजार पोखर मुंगेर -८११२०१; १७ वर्ष

अभिमन्यु मिश्रा, मिश्रा पान शौप मासुन डाक कुलावा बम्बई-५, १८ वर्ष बडों का मम्मान करना

कुलदीप कुमार मक्सैना द्वारा कैलाश नाथ अवस्थी ५५१क ८८ मिल्लावा आलम वाज लखनऊ, १९ वर्ष

खुर्शीद रिज्वी १०५,२८८ श्री-नगर कानपुर-१, १९ वर्ष, ऐक्टिंग करना, गाने गाना, पत्र-मित्रता।

मदन लाल अरोडा, नैशनल इन्शोरेन्स कं. लि. करनाल-१३२००१, २४ वर्ष, पत्र-मित्रता

मनजीत राय तनेजा, बस स्टैण्ड मन्डी गिदड़वाहा-१५२१०१; २० वर्ष.

अशोक कुमार गुप्त, द्वारा डा. एस. एन. प्र. नरकटिया गज (प [illegible] विहार [illegible]

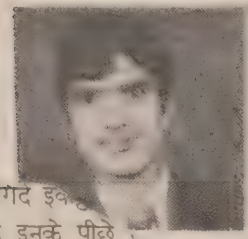

इर्दगिर्द इक [illegible]
झुंड इनके पीछे
ज्यादा फारेन गोरी

[illegible]गोयास, १८

अनुपम हाडा, रेल्वे क्वार्टर, जैतो, २० वर्ष, नावल पढ़ना, एक्टिंग। टिकट संग्रह करना,

भगवत कुमार द्वारा सेठ थारू मल पीलीभीत (उ. प्र.), १८ वर्ष, गुदगुदे पत्र लिखना

सिगारा सिंह सोपकापर पो. जन्डाली, जिला जलन्धर वाया फगवाड़ा, २९ वर्ष.

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंड्शिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

अजित कुमार राय द्वारा एस. पी. राय (सरकारी वकील) न्यू बरगण्डार अलकापुरी गिरिडीह (बिहार)

विजय कुमार कटारा, द्वारा भजन लाल कटारा मालवीय नगर गोण्डा (उ. प्र.)-२७१००१

अन्जुम अशरफ, १९७, हरि नगर मेरठ (शहर), १६ वर्ष, जूडो, कराटे खेलना।

राजकुमार आर. पी. मगत इटिया गांधी, सिमरी बख्तियारपुर, पुर, सहरसा (बिहार) १८ वर्ष

सुनील कुमार झुमरीतिलयां वाला, सेठी जेन. स्टोर्स, झुमरी तिलया, २० वर्ष,

भूपेश अंग्रीष म.नं. १००G, गीता नगरी, अम्बाला शहर-७, १७ वर्ष, टिकट संग्रह, दीवाना पढ़ना।

धनश्याम शर्मा, १६ अन्न पूर्णा फ्लोर मिल, ब्रह्मपुरी खुर्रे के नीचे जयपुर-३०२००२, १६ वर्ष,

किशोर कुमार, २०५ मालवीय नगर लधवानी भवन गोण्डा (उ.प्र.) १७ वर्ष, पत्र-मित्रता

संजय कुमार हिमांशु, सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक, गोपालगंज, १५ वर्ष, बैट्रमिंटन खेलना

नटवर पाटिल "राकी" टेलीफोन केन्द्र के पास मेनरोड कोठडागांव, १६ वर्ष, पत्र मित्रता करना।

विजय कुमार पाठक द्वारा श्री. एम. एल. पाठक, ८७, विजय नगर, मेरठ (यू. पी.) १६ वर्ष

रविटन्डन बड़तला यादगार माली-गेट—सहारनपुर, १५ वर्ष, क्रिकेट खेलना।

राशिद जफर ६७/४ बेनियाबाग वाराणसी, १५ वर्ष, क्रिकेट खेलना।

किशन अचनानी, ४५०, सब्जी मंडी, कोटा (राज.) १६ वर्ष, पत्र मित्रता करना।

हमारा पता: दीवाना फ्रैंड्स क्लब ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२.
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम _____

पता _____

_____

आयु _____ शौक _____

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

पृष्ठ ३२ से आगे

रेत का . आखिर वहां इतनी रेत कहां से आती है? रेगिस्तानों में रेत अधिकतर तेज हवाओं के साथ उड़ कर आती है तथा कुछ हालात में यह रेत चट्टानों के पूरी तरह नष्ट हो जाने पर बनी होगी. इसके अतिरिक्त कुछ स्थितियों में तो यह रेगिस्तान सहस्रों वर्ष पहले के समुद्रों के सूखे तले होंगे.

रेत बहुत उपयोगी पदार्थ है. इसका उपयोग कंकरीट बनाने, कांच बनाने तथा रेगमाल बनाने में होता है इसके अति पानी को छान कर साफ़ करने में भी प्रयोग की जाती है.

क्यों और कैसे?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

पृष्ठ ३६ से आगे

पहले ही कह चुका हूं, जिंदगी 'एब्सर्ड' यानी 'निरर्थक' है।''

''इसका यह मतलब भी तो हो सकता है, जिंदगी नहीं आप स्वयं निरर्थक हैं।''

''कम से कम मैं उन लोगों से ज्यादा निरर्थक नहीं जो जिंदगी को निरर्थक नहीं समझते।''

''बहरहाल आप बहुत दिलच नवयुवक हैं।''

''धन्यवाद! मेरे ख्याल में अब वर्ता का सिलसिला खत्म किया जाये। जिंदगी संघर्ष और भंग मेरी प्रतीक्षा कर रही 'गुड-वाई!''

अनुः तरनजीत

पृष्ठ ३३ से आगे

वर्ष	को हराया	देश	स्कोर
	रॉफ गोहरिंग	पं. जर्मनी	6-4, 7-5, 6-0
	विटास जैरुलाइटिस	अम.	7-6, 7-5, 7-6
	पीटर मैकनमारा	आस्ट्र.	7-6, 6-2, 6-3
	जिम्मी मारर्स	अम.	0-6, 4-6, 6-3, 6-0, 6-4

(इस वर्ष अपने ४२ वें मैच में बोर्ग फाइनल में मैकेनरो से हार गये)

स्मिता पाटिल
छायाकार : जगमोहन
दीवाना

कलात्मक से व्यवसायिक फिल्मों तक
स्मिता पाटिल

स्मिता पाटिल का नाम उन अभिनेत्रियों में गिना जाना चाहिये जिन्होंने अपना कैरियर आर्ट फिल्मों से आरम्भ किया और व्यवसायिक फिल्मों में सफलता प्राप्त की.

फिल्म 'मंथन' में स्मिता पाटिल का उल्लेखनीय अभिनय रहा है श्याम बेनेगल के निर्देशन में स्मिता आर्ट फिल्मों में चमकी लेकिन व्यवसायिक फिल्मों की चकाचौंध से स्मिता पाटिल बच नहीं पाई और मैदान में उतर आई.

इससे पूर्व शबाना आजमी भी कलात्मक फिल्मों की शोभा बन चुकी है उन्हीं के पद चिन्हों पर स्मिता चल रही है.

'एल्बर्ट पिन्टो को गुस्सा क्यों आता है' इस फिल्म में स्मिता पाटिल ने एक बेमिसाल भूमिका निभाई है. नेकस्लाईट में नक्सलवादी युवती की भूमिका निभाई. फिल्म भूमिका में वह पहले ही अपनी अभिनय क्षमता का प्रदर्शन कर चुकी हैं ख्वाजा अहमद अब्बास, सईद मिर्जा जैसे बड़ी हस्तियां स्मिता से प्रभावित हैं हाल ही में प्रदर्शित फिल्म चक्र में स्मिता ने अम्मा की भूमिका जो निभाई है वह बेजोड़ है इसी भूमिका के लिये स्मिता पाटिल को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

कई एवार्ड विजेता स्मिता पाटिल की गिनती बिंदास अभिनेत्रियों में की जा रही है. रेखा के बाद बिंदास पन में स्मिता का ही नाम गिना जाता है

जिस प्रकार अभिताभ बच्चन की प्रेमिका

रेखा चर्चित रही है उसी प्रकार स्मिता पाटि का नाम विनोद खन्ना के साथ जोड़ा जा है. विनोद खन्ना की पत्नी गीतांजली इसी का विनोद खन्ना का घर छोड़ कर चली गई स्मिता पाटिल आचार्य रजनीश के आश्रम बराबर विनोद खन्ना से मिलने आती ज रहती है.

पिछले दिनों स्मिता पाटिल के बारे में स विनोद खन्ना ने कहा था कि जो सौ आकर्षण स्मिता में है वह किसी और में न मैं उससे प्रभावित हूँ. आज व्यवसायि फिल्मों में स्मिता की मांग है.

विजय भारद्व